॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ काशी (पंचक्रोशी) माहात्म्य ।

* ॥ भाषाटीका सहित प्रारम्भः ॥ *

वन्देदेवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं ।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनाम्पतिम् ॥
वन्दे सूर्य्यसशांकवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं ।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवंशंकरम् ॥ १ ॥

अर्थ—पार्वती के स्वामी, देवताओं के गुरु, जगत के कारण, सर्पही हैं भूषण जिनके, मृगा को धारण किये, पशुओं के स्वामी, (पशु—इन्द्रियों के स्वामी) सूर्य चन्द्र अग्नि तुल्य नेत्र धारण किये, विष्णु के प्यारे भक्तजनों के आश्रय देनेवाले ऐसे शिव विश्वम्भर को नमस्कार है ॥ १ ॥

श्रीकपिलउवाच ॥ एवंसिद्धाः काशिकायांवसेद्यः
सर्वैर्धर्मैःसंयुतःसोतिवंद्यम् ॥ तस्माद्धर्माः सततं
सिद्धिभूमौसंसेव्याः स्युः पापकंनाल्पमत्र ॥ १ ॥

कपिलउवाच ॥ जो कोई सर्व धर्म्म करके युक्त काशीपुरी सिद्धिभूमि में वास करते हैं हे सिद्ध ! वे लोग सदा वंद्य

हैं काशी नाम पुरी की महिमा कौन कह सकता है तथापि सूक्ष्मरूप से मैं वरणन करता हूँ; आप श्रद्धा भक्ति से सुनें ॥१॥

येयेधर्मामानवैः संप्रयुक्ताः काश्यांतेतान्मोक्षसिद्धिं नयंति ॥ तस्मात्सिद्धिः साधयेदात्मकार्यं सद्भिः शास्त्रैश्रद्धयात्यागयोगैः ॥२॥

जो मनुष्य काशीपुरीमें सद्धर्म को अवलम्बन करके वास करते हैं वे अवश्य मोक्ष को प्राप्त होते हैं; इससे श्रद्धा युक्त होकर त्याग योग करके आत्मकार्य (मोक्ष) साधन करै ॥ २ ॥

काश्यांकृतानांपापानां पुण्यानांवासमृद्धयः ॥ भवंतिसततंनूनं सुक्षेत्रेह्युप्तवीजवत् ॥ ३ ॥

वाराणसीपुरी में पुण्य व पाप दोनों वृद्धि को प्राप्त होते हैं "जैसे सुक्षेत्र (खेत) में बोया हुआ बीज वृद्धि को प्राप्त होता है उसी प्रकार पाप व पुण्य की वृद्धि होती है ॥३॥

सिद्धाऊचुः॥ देवदेवारविंदाक्ष सांख्ययोगप्रवर्तक॥ कथंमुच्येतमनुजः काश्यामेवकृतैरघैः ॥ ४ ॥ मोक्षं प्राप्नोति च कथंकथं वा जीवने सुखं ॥ आनन्दकाननेह्यस्मिन्कथमानन्दभाग्भवेत् ॥ ५ ॥

सिद्धउवाच ॥ हे देवदेव ! हे अरविन्दाक्ष !! हे सांख्य-योगप्रवर्त्तक !!! आप देवताओं के देवता; कमलवतनेत्र,

सांख्ययोग के कहने वाले आपसे सविनय निवेदन है कि, हे महाराज ! जो मनुष्य काशीपुरी में किया है पाप वो मनुष्य किस प्रकार उस पाप से छूटेंगे और मोक्ष कैसे मिलेगा इस आनन्दरूपी बन में जीवन का सुख व आनन्द के भोक्ता किस प्रकार होंगे सो कृपा करके बताओ॥४॥

कपिलउवाच ॥ इदमेवपुरापृष्टः पार्वत्याभगवान
भवः॥पापनाशंधर्मवृद्धिरविलंवेनमोचनम् ॥ ६ ॥

कपिलउवाच ॥ कपिलजी बोले, हे सिद्ध लोगो सुनो यही प्रश्ण प्रथम पूर्वकाल में महाराणी पार्वती ने भोलानाथ महादेव से पूँछा था, कि काशी पुरी में पाप का नाश व धर्म की वृद्धि थोडेही यत्न से शीघ्र कैसे प्राप्त होगी सोई मैं आपसे वर्णन करता हूँ सुनो ॥ ६ ॥

पार्वत्युवाच ॥ दीनानाथैकशरणंदेवदेवदयानिधे ॥
पाहिलोकान्बिभेदज्ञान्सूक्तैःपापप्रणाशनैः ॥७॥

पार्वतीजी बोलीं, हे दीनानाथ ! हे देवदेव !! हे दयानिधि !!! (दीनों के स्वामी देवतों के देवता, दया के समुद्र) आपको शतशःनमस्कार हैं, हे महाराज ! पाप के नाश करनेवाले सूक्तों करके लोकों को आप पालन करें ॥ ७ ॥

आगत्यशीघ्रंयेप्राप्ताः काशींतीर्णाःक्षणेनते ॥
येतुस्थित्वासुकृतिनस्तेपिशीघ्रंपरंगताः ॥ ८ ॥

जो कोई काशीपुरी में मरने के समय शीघ्र आकर

शरीर त्यागते हैं और जो कोई सुकृत कर्म करते काशी में शरीर त्यागते हैं वे दोनों बहुत जल्द मोक्ष को प्राप्त होते हैं ॥ ८ ॥

पापंकृत्वामृतायेच तेषांमुक्तिःकथंभवेत् ॥ कृपया देवदेवेशप्रायश्चित्तमशेषतः ॥ ९ ॥

हे देवदेव ! जो कोई पाप कर्म को करके मृत्यु को प्राप्त होते हैं वो कैसे मुक्ति को प्राप्त होंगे, सो हे महाराज!! कृपा करके उन पापियों के लिये परिपूर्ण प्रायश्चित वर्णन करो ॥ ९ ॥

महादेवउवाच ॥ शृणुपार्वतिवक्ष्यामियद्गोप्यंम-मसर्वतः ॥ पुण्यवद्भिः पापवद्भिः कर्त्तव्यंकाशि वासिभिः ॥१०॥

श्रीपार्वतीजी के बचन सुनकर महादेवजी बोले, हे पार्वती ! सुनो जो पाप कर्म के करनेवाले हैं अथवा पुण्य कर्म के करने वाले हैं, इन दोनोंही के करने योग्य जो संसार में छिपा हुआ यत्न है उसे मैं आप से वर्णन करता हूँ सुनो ॥१०॥

नकोपिदृष्टोमनुजोविनापापंशरीरभाक् ॥ कुर्वन्न पिमहापुण्यंपापंसंस्कारतश्चरेत् ॥११॥

शरीर के धारण करनेवाले मनुष्य संसार में बिना पाप के कोई नहीं देखा महापुण्य को करते हुये संस्कार से पाप

को प्राप्त हो जाते हैं ॥११॥

देहःस्वकार्यंकुरुते इन्द्रियाणिस्वकर्मसु ॥
प्रवर्त्ततेवलादेवं मनःकेननिवार्यते ॥ १२ ॥

अपने कार्य को करते हुये कर्म में इन्द्रियों को लगाये हुये इस संसार में काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि अनर्थ वस्तुओं से कौंन ऐसा बलवान है जो शीघ्र बल से मनको जीते, अथवा खींचले ॥१२॥

प्रायश्चित्तानिकिंतानि यैःपुनःसंप्रवर्त्तते ॥
मनःशरीरादिपुनः प्रायश्चित्तनतद्भवेत् ॥ १३ ॥

जो कोई प्रायश्चित्त करके फिर पाप कर्म में रत होते हैं उनको प्रायश्चित फिर करने को अधिकार नहीं है ॥१३॥

प्रायश्चित्तत्रयंसूक्ष्ममनुभूतंमहात्मभिः ॥ ब्रह्मह-
त्यादिपापानामन्यंपापकृतांनुकिं ॥१४॥

महात्माओं करके तीन प्रकार के प्रायश्चित्त कहे गये हैं ब्रह्महत्यादि पाप कर्म जिससे दूर होते हैं ॥१४॥

काश्यामपिवसन्जंतुर्यदिपापकृदत्रहि ॥ प्राय
श्चित्तत्रयंकृत्वासद्योमुच्येतवंधनात् ॥१५॥

जो पापकर्म के करने वाले वाराणसीपुरी में वास करते हैं वो तीनों प्रायश्चित्त करके शीघ्रही पाप बंधन से छूट जाते हैं ॥१५॥

देव्युवाच ॥ आश्चर्यमेतद्भगवन्त्वयानिगदितं-

विभो ॥ वाराणस्यांकृतैः पापैर्मुच्यतेयन्नरःसकृत्॥ १६॥ कृपयातथैतद्ब्रूहि कलावपिहिनिष्कृतिः॥
कलौकलुषचित्तानांकधर्मः किंपरंपदम् ॥ १७ ॥

श्री पार्वतीजी बोलीं, हे भगवन् आपने तो अतिआश्चर्यित बात कहीं, काशीपुरी में मनुष्य शीघ्रही यत्न करके पाप से छूट जाय वह उपाय इस कलियुग में मोक्ष साधन रूप यत्न आप मेरे पर कृपा करके कहें, कलियुग में पापी मनुष्यों का क्या धर्म है और कौन परंपद है कृपा पूर्वक यह भी कहो, हे महाराज ! जिससे पापीलोगों का भी उद्धार हो ॥१६॥१७॥

श्रीभगवानुवाच ॥ शृणुलोकहितंदेविलोकानां मुद्धृतिंपराम्॥ प्रायश्चित्तत्रयंवच्मिकाश्येनः संदिधक्षताम् ॥ १८ ॥

श्री जगज्जननी पार्वती के वचन सुनकर श्रीमहादेवजी बोले; हे देवि ! इस संसार में मनुष्यों की परम उद्धृति सुनो, काशीपुरी में पाप से जल रही है आत्मा जिनकी उनके लिये तीन प्रकार के प्रायश्चित्त वर्णन करता हूँ॥१८॥

वापीकूपतड़ागादिजीर्णोद्धारकृतांन्नृणाम् ॥
प्रभवेन्नमहत्पापंकाश्यामपिकृतंहियत् ॥१९॥

वावली, कुआं, तड़ाग, जीर्णमंदिर आदि के जीर्णोद्धार कराये हुये मनुष्यों को काशीपुरीमें महत् से भी महत्

पाप नहीं लगते ॥१९॥

आपोनाराइतिप्रोक्ताआपोवैनरसूनवः ॥
अयनंतस्यताःपूर्वं तेननारायणःस्मृतः ॥ २० ॥

आप नाम जलका है जलही में अयन (स्थान) है जिनका इसी से नारायण नाम ईश्वर का है "सो ईश्वर जिस मनुष्य ने जीर्णोद्धार कराया है" उसके संपूर्ण पाप नाश करते हैं ॥२०॥

तेनेश्वरेणहरिणा कृतंपापप्रणाशनम् ॥
यत्रयत्रजलंकाश्यामुद्धरेत्सुकृतीनरः ॥ २१॥
तत्रतत्रमुदायुक्ताःपितरःपर्युपासते ॥ काश्यां
रुद्रमयाःसर्वेजंतवःश्रुतिनोदिताः ॥ २२ ॥

जो सुकृती नर काशीपुरी में जलदान करता है उसपर उसके पिता प्रसन्न होते हैं श्रुतियों के वाक्य हैं कि काशीपुरीमें जितने मनुष्यहैं वे सब रुद्ररूप हैं ॥२१॥२२॥

तेपिबंतिजलंयत्रतडागादौतृषार्दिताः ॥
तत्पुण्यंनमयावक्तुंशक्यंवर्षशतैरपि ॥२३॥

जो मनुष्य प्यास से पीड़ित होकर तड़ाग आदि में जल पान करते हैं उस पुण्य को हे देवि ! मै शत वर्ष बराबर वर्णन करूं तो भी नहीं वर्णन हो सकता ॥२३॥

आसीद्धर्मपथोनामवणिक्कश्चित्सुधार्मिकः ॥
कुलस्तंभस्यवायव्येतेनखातःप्रखानितः ॥२४॥

हे पार्वती! मैं तुमसे पूर्वहीं की कथा वर्णन करता हूं सुनो; काशीपुरी में एक सुधार्मिक धर्मपथ नामक वैश्य रहता था सो कुलस्तम्भ के वायव्यकोण में एक खात (तड़ाग) को खुदवाता भया ॥२४॥

तत्रगावोमनुष्याश्चपिबंत्यंभस्तृषार्दिताः ॥
प्रत्यहंतस्यसुकृतंवर्धतेचन्द्रमायथा ॥२५॥

उस तड़ाग में प्यास से पीडित गौ, मनुष्य यावत जंतु जल को पीतेथे तो जैसे " प्रतिपदासे पूर्णिमा तक चन्द्रमा की कला वृद्धि होती है " उसी प्रकार धर्मपथ वैश्य की सुकृति वृद्धि को प्राप्त होती भई ॥२५॥

सूक्ष्मधर्मोमनुष्याणांदुर्लभोविषयात्मनाम् ॥
कालेनमहतातत्रदुर्भिक्षकरपीडितः ॥२६॥
दरिद्रतामवापोच्चैःब्राह्मणेकृदभूत्ततः ॥
ब्राह्मणेनधृतःक्वापिस्वधनार्थंऋणीवणिक् ॥२७॥

अति समय के बाद दुर्भिक्ष से पीडित धर्मपथ वैश्य अतिदरिद्री एक ब्राह्मण से ऋण लेता भया कुछ काल के बाद ब्राह्मण ने अपने धन के लिये साधु वैश्य को पकड़ा ॥२६॥२७॥

मद्धनंदेहिदुष्टेतिपरिक्षिप्तःपुनःपुनः ॥
ब्राह्मणेनवणिग्धर्मपथोदैन्यमुपागतः॥२८॥

साधु वैश्य को पकड के ब्राह्मण बोला हे दुष्ट ! मेरे

धन को दे बहुत काल व्यतीत हो गया है; ब्राह्मण करके साधु धर्मपथ दुःख को प्राप्त होता भया और वैश्य धर्मपथ बोले कि हे ब्राह्मणसत्तम !!! मेरे पास इस समय कुछ भी धन नहीं है हे महाराज ! इस समय आप अपने क्रोध को शांत करें ॥२८॥

इदानींनधनंकिंचिदस्तिब्राह्मणसत्तम ॥
ब्राह्मण उवाच ॥ शतत्रयपरीमाणंनि
ष्कानांहेमदेहितत् ॥२९॥ नोचेत्तडा
गोमन्नाम्नाप्रथितव्यस्त्वयापरम् ॥ त्व
त्कारितोबहुधनैर्गंभीरोनिर्मलोदकः ॥३०॥

वैश्य के वचन सुनकर ब्राह्मण बोलते भये, रे वैश्य ! सुन मुझे तीन सौ सुवर्ण मुद्रा उस ऋण के बदले में दे यदि तेरे पास धन नहीं है तो तेरा बहुत धन करिकै बनवाया हुआ निर्मल जल से पूर्ण अति गंभीर तड़ाग को मेरे नाम से प्रसिद्ध कर ॥२९॥३०॥

विमुक्तोभवदत्वाशुतडागंलोकसन्निधौ ॥
धर्मपथउवाच ॥ अवश्यंमोचयतुमामृणा
च्छीघ्रंभवान्प्रभो ॥३१॥

लोगों के सन्मुख तड़ाग को देकर ऋण से मुक्त होजा, यह वचन सुनकर धर्मपथ नाम वैश्य बोला, हे विप्रवर ! अवश्य मुझ सेवकको ऋण से शीघ्र आप छुटावें, आपही

के भाँती हे महाराज ! बड़ों को चाहिये ॥ ३१ ॥

ऋणयुक्ताम्रियंतेचेत्पच्यंतेनरकार्णवे ॥
जनाश्चोरजनस्यापिगृहीत्वाधनमत्रतु ॥३२॥

जो मनुष्य चोर जनका भी धन ग्रहण करके ऋण युक्त मृत्यु को प्राप्त होते हैं वे अवश्य घोर नर्क में जाते हैं और अनेक यमयातना से दुःख को प्राप्त होते हैं ॥३२॥

नरकेपरिपच्यंतेऋणयुक्तानराधमाः ॥
किंपुनर्ब्राह्मणस्याणुमात्रंहत्वामृतोहि यः ॥३३॥

हे महाराज ! जो मनुष्य ब्राह्मण का अणु (थोरे से थोरा) धन हरके मृत्यु को प्राप्त होते हैं वो अधम नर अवश्य घोर नर्क में पकते हैं और अनेक दुःख को प्राप्त होते हैं ॥३३॥

ब्राह्मणायद्वादिष्यंतितत्कर्त्तास्मिनसंशयः ॥
सतुवार्द्धुषिकोगत्वामेलयित्वाद्विजान्बहून् ॥३४॥

हे महाराज ! आप के कहे हुये वचन मैं अवश्य करूंगा यह वचन कह कर साधु धर्मपथ वैश्य ब्राह्मण को संग में लेकर तड़ाग के पास गया और बहुत ब्राह्मणों को इकट्ठा किया ॥३४॥

आनयामास देवेशि यत्र धर्मपथोवणिक् ॥
द्विजःपृष्टौवणिग्विप्रोकथ्यतांज्ञानकारणम् ॥३५॥

हे पार्वती उसी समय बहुत ब्राह्मण आये और ब्राह्मण

लोग बोले हे वैश्य ! हे विप्र ! आह्वान (बुलाने का) कारण कहो हमको किस प्रयोजन के लिये बुलाया ॥३५॥

यदर्थंवयमाहूतास्तच्छ्रुत्वायदिशामहे ॥
धर्मपथउवाच ॥ अहंऋणीब्राह्मणस्यनिष्कानां चशतत्रयम् ॥३५॥
गृहीतंव्यवहारार्थंदैवान्नष्टंशनैःशनैः ॥
असौविनियमेनाशुसुवर्णस्यतडागजम् ॥३६॥
सुकृतंप्रार्थयत्येवतद्विचार्ययथोच्यताम् ॥
यथाकथंचिन्मुक्तःस्यांतथाशीघ्रंविधीयताम् ॥३७॥

हे साधु ! यदि कल्याण मानते हो तो बुलाने का प्रयोजन कहो; यह वचन सुनकर धर्मपथ वैश्य बोला, हे द्विजराज ! मैं ब्राह्मण का ऋणी हूँ तीन सौ सुर्वण मुद्रा मैंने ग्रहण किया था सो दैवात धीरे २ सब नष्ट हो गये हे द्विज ! उस सुर्वण मुद्रा के बदले में तड़ाग से उत्पन्न सुकृत को प्रार्थना करता हूँ हे महाराज ! आप कृपा करके विचार पूर्वक कहें कि जिसप्रकार मैं ब्रह्मऋण से छूट जाऊं वही बिधि वर्णन करो ॥३६॥३७॥

ब्राह्मणा उचुः॥ साधूक्तंधर्मपथतेऋणभीत्याम हामते ॥ सुविचारितमस्माभिर्वक्तव्यंसुदृढंखलु३८

धर्मपथ वैश्य के वचन सुनकर ब्राह्मण लोग बोले, हे धर्मपथ ! तुमने ऋण भय से अच्छा पूँछा है हमलोग

विचार पूर्वक तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देयगें ॥३८॥

अस्मान्नाहूययोधृष्टोनश्रोष्यतिवचोहिनः ॥
शिरस्तस्यविशीर्णःसन्पतिष्यतिनसंशयः ॥३९॥

जो पुरुष हम लोगों को बुलाकर हमारे बचन नहीं सुनता व नहीं धारण करता उस मनुष्य का शिर अवश्य गलकर गिर जाता हैं इसमें संशय नहीं हैं ॥३९॥

ब्राह्मण उवाच ॥ ब्राह्मणानांवचोग्राह्यंमयास र्वात्मनाहितम् ॥ अत्रप्रमाणंभगवान्विश्वेशः पार्वतीपतिः ॥४०॥

ब्राह्मण बोला मुझे अन्तःकरण से ब्राह्मणों के बचन ग्राह्य हैं इसके प्रमाण में विश्वेश्वर, पार्वती पति, महादेवजी की शपथ है ॥४०॥

धर्मपथउवाच ॥ यद्भूमिदेवैर्वक्तव्यंतन्मया ग्राह्यमेवहि ॥ अत्रप्रमाणंभगवान्विश्वेशः पार्वतीपतिः ॥४१॥

धर्मपथ वैश्य बोला कि, हे महाराज! हमको भी ब्राह्मणों के कहे वचन ग्राह्य हैं मुझे भी विश्वम्भर महादेवजी की शपथ है ॥४१॥

द्विजा ऊचुः ॥ आनयंतुमनुष्यायेसमर्थामहतीशिलाम् ॥ इतिश्रुत्वासुवलिभिर्वणिक्धर्मपथःक्षणात् ४२

इसप्रकार ब्राह्मण व साधु वैश्य के वचन सुनकर ब्राह्मण लोग बोले, जो बलवान मनुष्य हो वही मनुष्य बडी भारी पत्थर की शिला लावे, यह वचन सुनकर धर्मपथ शीघ्रही बडीभारी शिला को मँगाया ॥४२॥

आनयामासविपुलांदृष्ट्वोचुर्ब्राह्मणास्तुताम् ॥
निक्षिप्यतांतडागेत्रनिमग्नास्तुऋणावधि॥४३॥

ब्राह्मण लोग उस शिला को देखकर बोले हे विप्र ! इस शिला को तड़ाग में फेंकदो जब तक यह शिला डूबी रहे तब तक तुमको पुण्य मिलेगा ॥४३॥

यावन्मनुष्यैःपाशुभिःपथिकैश्चापितज्जलम् ॥
पीतंतद्धनपर्याप्तमुन्मज्जतुततस्त्वियम् ॥४४॥

जब तक यह शिला जल में डूबी रहे. तदनन्तर जो मनुष्य, पशु, पथिक जल पीवें उसकी पुण्य हे विप्र ! तुम्हारे धन के बदले में है जब शिला ऊपर को उतरानेलगे तब यह तड़ाग वैश्य का हो जायगा ॥४४॥

इत्युक्तासाशिलाविप्रैःपातितातज्जले शुभे ।
चक्रुः शिवकथांपुण्यांकाशिवासिजनैस्ताम्॥४५॥

इस प्रकार ब्रह्मणलोग वचन कहकर उस महती शिला को तड़ाग में फेंक देते भये और काशीवासि जनों के साथ पुण्य शिव कथा को कहने लगे ॥४५॥

क्षणांतरेगौस्तृषितासवत्सासमुपागता ।
तयापीतंजलंतृप्तासाभवच्छृणुपार्वति ॥४६॥

हे पार्वती! क्षण मात्र के बाद प्यास से व्याकुल वत्स (बछरा) के साथ एक गौ उस तड़ाग के पास आती भई और आकर जलपान करके अतिहर्ष को प्राप्त होती भई ॥४६॥

साशिलाऋषिमुख्यानांप्रभावाज्जलमध्यतः ।
जलोपर्यभवच्छीघ्रंपश्यतांसर्वदेहिनाम् ॥ ४७ ॥

हे देवि ! वह शिला गौ के तृप्ति के पश्चात् ऋषियों के प्रभाव से सर्वमनुष्यों के देखते २ ऊपर को उतराने लगी ॥४७॥

यथातुम्बीफलंशुष्कंगच्छतीततस्ततः ।
तथालघुतराजातापश्यधर्मस्यगौरवम् ॥४८॥

जैसे सूखी तोंबी जलमें इधर उधर उतराय इसी प्रकार वह शिला उतराती भई हे प्रिये ! धर्म का गौरव देखो इसी प्रकार होता है ॥४८॥

सर्वेलोकास्तुतंदृष्ट्वाप्रशंसुःऋषिपुंगवान् ।
अपूर्वंदर्शितंपुण्यमृषिभिःसुमहात्मभिः ॥४९॥

सब मनुष्य माहात्मा ऋषियों को देखकर प्रसंशा करने लगे आपने अपूर्वचरित्र दिखाया धन्य है !! ॥४९॥

अहोनदृष्टमस्माभिःकदाचित्सुमहाद्भुतम् ।
पुण्यंसूक्ष्मंनजानातिसर्वेलोकाःकथंचन ॥५०॥

हम लोग इस प्रकार के अद्भुत चरित्र आज तक न देखा था अहो धर्म की अति सूक्ष्म गति है ॥५०॥

महादेव उवाच ॥ काश्यांकिंचिज्जलंयैस्तु संपादितमनामयम् ॥ नतेषांपापलेशोपिका श्यामपिकृतंप्रिये ॥ परञ्चसावधानैर्हिकर्त्त व्यःसुजलाशयः ॥ अपराधोनभवतिमहा पापकृतक्षयः ॥५१॥

हे प्रिये ! काशीपुरी में जिसने तड़ागादि बनवाये हैं उस मनुष्य को काशी में किये पाप भी नहीं लगते पर साव-धान पूर्वक जलाशय को बनवावे तो पाप नहीं लगता अभिमान को त्यागदे ॥५१॥

देव्युवाच ॥ जलाशयेकृतेदेवकारितेवामहात्मभिः ॥ कोपराधःपतेदत्रतन्ममाचश्वशंकर ॥

श्री पार्वतीजी बोलीं हे ईश्वर ! महात्माओं करिकै जला-शय बनवाने में कौनसा अपराध लगता है सो हे शंकर ! मेरे पर कृपा करके वर्णन करो ॥५२॥

महादेव उवाच ॥ काश्यांतिलेतिलेलिंगंकाश्यां तीर्थंपदेपदे ॥ खननंकाशिभूमेस्तुदुर्घटंभाति पार्वति ॥५३॥

प्रिया पार्वती के बचन सुनकर महादेव जी बोले

हे पार्वती ! काशीपुरी में तिल२ पृथ्वी में महादेवजी के लिंग हैं और पद २ में तीर्थ हैं काशीपुरी की पृथ्वी खोदने में अति दुर्घट है ॥५३॥

जीर्णोद्धारंचयेकुर्युस्तेनिःसंदेहामहाधियः ॥
स्वयंकृतंयत्खातादितदनेकफलप्रदम् ॥५४॥

इससे जीर्णोद्धार जो कराते हैं वे अवश्य अतिबुद्धिमान हैं और जो पुरुष स्वयं तडागादि बनवाते हैं उसका क्या माहात्म्य कहूं ॥५४॥

ततोप्यधिकधर्मादिजनकंजीर्णमुत्धृतम् ॥
नतत्रलिंगपीड़ास्यान्नतीर्थखननंभवेत् ॥५५॥

तीर्थ मंदिरों का जीर्णोद्धार कराने में अतिपुण्य है कारण यह है कि, तीर्थ व महादेव के पिंडों का खनन नहीं होता ॥५५॥

[illegible]र्णोद्धतिःकार्यानिरवद्यामहाफला ॥
जीर्णोद्धारंप्रकुर्वा[illegible]षांविश्वेश्वरःस्वयम् ॥
काश्यांकृतानांपापानांमूलोद्धारंकरोतिहि ॥५६॥

इससे जीर्णोद्धार कराने में अतिपुण्य हैं जो मनुष्य तीर्थ व मंदिर व तडागादि का जीर्णोद्धार कराता है उसके काशी में किये हुये पापों को विश्वेश्वर विश्वनाथ आपही सब पाप नाश करते हैं ॥५६॥

योवुद्धिपूर्वंप्रकरोतिपापंनतस्यकाश्यांमरणंप्र
सिध्यति ॥५७॥

मृतोपिनिर्वाणसुखंनवाप्नुयात् यावत्पिशाच
वाप्नुयान्नरः ॥ ५७ ॥

मनुष्य काशी में जानकरके पाप करते हैं वो अव-
रिके काशी में नहीं मरते यदि मृत्यु को प्राप्त होते
हैं तो मोक्ष का सुख नहीं मिलता और पिशाच योनि
को प्राप्त होते हैं ॥ ५७ ॥

देव्युवाच ॥ पिशाचत्वस्यमर्यादांब्रूहि
पापस्यचानघ ॥ यातनायाश्चयद्रूपं
बुध्यबुद्धिकृतंचयत् ॥ ५८ ॥

श्रीपार्वतीजी बोलीं हे अनघ ! पिशाच योनि की मर्या-
[illegible] कहो जिसप्रकार [illegible] तना व बुद्धि होती है सो कृपया
आप कहें ॥ ५८ ॥

भगवानुवाच ॥ भवानिभवभीतानांनृणांन
स्तारकारणम् ॥ पृष्टंपृथक्प्रवक्ष्यामिभीताना
मभयप्रदम् ॥५९॥

श्रीमहादेवजी बोले हे भवानी ! संसार से डरे हुए मनु-
ष्यों के कल्याण के लिये यत्न मैं अलग कहूँगा ॥ ५९ ॥

काश्यामागत्यसततंश्रोतव्याकाशिसत्कथा ॥
नविनाश्रवणंपुण्यंपापंवावेत्तिकश्चन ॥६०॥

जो मनुष्य बाहर से काशीपुरी में आकर काशी माहात्म्य
नहीं श्रवण किया उसको पुण्य व पाप नहीं लगते ॥६०॥

विदित्वायततेभूयोनिस्तारायपरायच ॥

सर्वलोकेषुवेदेषुविचारःश्रवणाद्भवेत् ॥६१॥

इस संसार में सुखके लिये अन्त में मोक्ष के लि[illegible] अ[illegible] काशीमाहात्म्य जानकर मोक्ष साधन करे सर्वलोक[illegible] रित्रों को व वेद को श्रवण करने से ही विचार होताहै

श्रुतिस्मृतिपुराणेषु सर्वशास्त्रेषुपार्वति ॥
काशीब्रह्मेतिविख्यातंतद्ब्रह्मप्राप्यतेत्रहि ॥६२॥

हे पार्वती ! श्रुति, स्मृति, पुराण, और अन्य सर्वशास्त्रों में काशी ब्रह्मनामसे विख्यात है इसी कारण काशी सेवनसे ब्रह्मपद प्राप्त होता है ॥ ६२ ॥

तस्मात्काशीगुणान्सर्वंतत्रतत्रवदंतिहि ॥
श्रुत्वापिपापनिरतास्तान्हन्यात्कालभैरवः॥६३॥

काशीमाहात्म्य सर्वशास्त्रों में कहा है पापरत मनुष्यों को सुनकर कालभैरव स्वयं मारते हैं ॥ ६३ ॥

संततंनिर्दयोभूत्वायावत्पापंसमाप्यते ॥
महापातकसंयुक्तास्त्रिंशदब्दसहस्रकम् ॥
प्रत्येकंप्राप्नुवंत्येवयातनांकालभैरवीम् ॥६४॥

कालभैरव निर्दय होकर जबतक उस मनुष्य के पाप नहीं समाप्त होते तबतक तीसहजार ३०००० वर्ष तक काल-भैरवी यातना (पीड़ा) प्रतिदिन प्राप्त होती है ॥ ६४ ॥

क्षुद्राणिपापानितुसंग्रहेणभवंत्यवश्यंतु
महांतितानि ॥ यथाहिरण्यंकणशोपिसं

चितंनिष्कादिवृद्धिंभवतेभवानि ॥६५॥

क्षुद्र भी पाप संग्रह से महत् हो जाते हैं, हे पार्वती ! जैसे अतिशूक्ष्म सुवर्ण संचित रहने से वृद्धिको प्राप्त होताहै ॥६५॥

सर्वेपिलोकाःकुरुतेप्रवृत्तिंप्रवृत्तिभाजांखलु
पातकंस्यात् ॥ अतःकियज्जीवितमाकलय्य
निवृत्तिरंगीक्रियतेमुमुक्षुभिः ॥ ६६ ॥

हे भवानी ! सर्वलोग प्रवृत्ति करते हैं और प्रवृत्तिही से पातक होता है इससे मोक्ष धारण करनेवाले कितने दिन जीवन के लिये प्रवृत्ति अंगीकार करते हैं इससे निवृत्ति अंगीकार करने चाहिये ॥ ६६ ॥

वाक्पातकंमानसकायिकेच प्रवृत्तिमार्गे
निरतस्यवश्यम् ॥ भवत्यसौयद्यपिसाव
धानस्तथापिसंस्कारवशादुपैति ॥६७॥

वाणी, अन्तःकरण, मन, शरीरादि से अवस होकर मनुष्य प्रवृतिमार्ग में प्राप्त होता है पर सावधानता से संस्कार बस निवृत्तिमार्ग में प्राप्त होय ॥ ६७ ॥

अतःप्रवृत्तिंपरिहायसेव्यावाराणसीसाधुजनैः
सुखार्थिभिः ॥ नचेद्यथेष्टाचरणेनयत्फलं
तद्भोगकालेप्रकटीभविष्यति ॥ ६८ ॥

हे भवानि ! प्रवृत्तिमार्ग को त्यागकर काशीके सत्पुरुषों करिके काशी सेवन करै सेवन के फलोदय समय में अवश्य

निवृत्ति मार्ग प्रकट होगा ॥६८॥

लौकिक्योयातनाःकश्चित्सोढुंशक्यानपार्वति ॥
किंपुनःकालराजेनकृतास्तीव्रातिदुःखिता॥

हे पार्वती ! किसी मनुष्य कारके लौकिक यातना (दुःख) सहवे योग्य नहीं है पर कालराजकी दी हुई यातना को सह सकता है ॥६९॥

नित्यंकृतानांक्षुद्राणांपापानांनित्यकर्मणां ॥
नाशःसंपाद्यतेसद्भिर्गंगास्नानादिभिर्नृभिः ॥७०॥

नित्य किये हुये क्षुद्रपाप सद्‌जनों के गंगास्नानादि कर्म करने से नाश को प्राप्त होते हैं ॥७०॥

त्रिंशद्वर्षसहस्राणित्रिंशद्वर्षशतानिच ॥
पच्यतेदुःखसंघौघैःकालराजेनसादरम् ॥७१॥

पाप के नाश होते पर श्री कालराज करिकै सादर तीस हजार व तीस सौ वर्ष दुःखों के समूहमें पकना पडता है ७१

...श्रुत्वातडागादिजीर्णोद्धारंप्रकल्पयेत् ॥
क्षेत्रेकृतानांपापानांप्रायश्चित्तंगतंमम ॥७२॥

इससे अवश्य करिकै तडागादिका जीर्णोद्धार करावै क्षेत्र-में किये पाप इसीसे मोक्ष होते हैं ॥७२॥

असावधानाहिनरात्मनोवैकुर्वंतिपापानि
किमत्रचित्रम् ॥ पठंतिजानंतिवदंतिनित्य
दासुपंडितास्तेपिविषाग्निमध्यगाः ॥७३॥

असावधानता से जो मनुष्य पाप करता है उसमें कोई ...त्र विचित्र बात नहीं है कारण यह है कि नित्य पढ़ने ...आ जानते हैं, कहते हैं इस प्रकार के शुद्ध पंडित लोग भी विषयरूपी अग्नि में प्राप्त होजाते हैं ॥ ७३ ॥

भवंतिदुःखान्यनुभूयपश्चात्तापेनपापेनचद
ह्यमानाः॥पुनःपुनर्विषयासक्तचित्ताःशास्त्रं
गुरुंदेवमथोनुकाशीं ॥ न्यकृत्यभूयोविषये
ष्वेवबुद्धिंकुर्वंतिसत्यांनतुकाशिकायां ॥७४॥

बारम्बार विषयासक्त मनुष्य पापरूपी ताप से जल रही आत्मा जिनकी वे अवश्य बारम्बार दुःख को प्राप्त होते उन मनुष्यों के लिये परम गुरू काशीपुरी है विषय-रूपी बासना से मनको खींचकर सत्यरूपी फलदाता काशी पुरी में मन लगावै ॥७४॥

व्यवहारोपितैस्त्यक्तःप्रसिद्धःसर्वजंतुषु ॥
मृत्तिकापरिवर्त्तेनहिरण्यंप्राप्यतेनहि ॥७५॥

सर्व मनुष्यों में यह प्रसिद्ध है कि व्यवहार भी काशी पुरी के वासियों करके त्याज्य है; मांटी के काम में कहीं सुर्वण की प्राप्ती नहीं होती है ॥७५॥

अहोकाश्यांकौतुकंतुपश्यपार्वतिसर्वदा ॥
गृहीत्वानरकंदेहंप्रददात्यमृतंपुनः ॥७६॥

हे पार्वति! काशी के सर्वदा कौतुक देखो; नरक देहको

धारण किये मनुष्य को अमृत देती है ॥७६॥

श्रुत्वाध्यायमिमंपुण्यंनदुःखैरभिभूयते ॥
सुखवासश्चभवतिकाश्यांसर्वजनप्रियः ॥७७॥

जो मनुष्य इस अध्याय की पुण्य कथा को श्रवण करेंगे उनको निश्चय दुःख नहीं प्राप्त होगा और काशीपुरी का वास सर्बजनप्रिय मिलेगा ॥ ७७ ॥

इतिश्रीब्रह्मवैवर्तेपंचक्रोशिमाहात्म्ये
प्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

इति श्री उन्नाव प्रदेशान्तर्गत बरौंड़ाग्रामनि वासि पं० उ-न्दमाधव दीक्षितात्मज महाराजदीन दीक्षितेन भाषा निर्बन्ध कृते ब्रह्मवैवर्त्ते काशी पंचक्रोशि माहात्म्ये जीर्णोद्धार माहात्म्य वर्णनं नाम प्रथमोध्यायः ॥१॥

श्रीदेव्युवाच ॥ देवदेवमहादेवभक्तानामभयप्रद ॥ काशीवासःसुगहनःपापिनांधनलोभिनाम् ॥ १ ॥

श्री देवी पार्वतीजी बोलीं, हे देवदेव ! हे महादेव ! हे भक्तानामभयप्रद ! ! ! काशी का वास पापी और धनलोभी मनुष्यों को अतिदुर्लभ है ॥१॥

विषयासक्तमनसांनसुखायकदाचन ॥
सुखायसर्वलोकानांप्रवृत्तिःकथिताकलौ ॥२॥

विषय में आसक्त हैं मन जिनके उनको काशीबास सुख लिये नहीं होता सो हे देवदेव ! कलियुग में सब लोकों

सुख के लिये प्रवृत्ति कहो ॥२॥

विषयेपरिपुष्टानांजीवनंनान्यथाभवेत् ॥
प्रायश्चित्तांतरंदेवबदस्वयदिमन्यसे ॥३॥

विषय में परिपुष्ट है आत्मा जिनकी उन मनुष्यों का जीवन व्यर्थ न होय इससे हे देव! प्रायश्चित्त वर्णन करो ३

प्रायश्चित्तविहीनस्ययातनाजायतेध्रुवम् ॥
बिभेमिदीनान्मनुजान्दृष्ट्वाशास्त्रपराङ्मुखान् ॥
तानप्युद्धरदेवेशशठान्स्वेच्छापरिग्रहान् ॥४॥

प्रायश्चित्त से रहित मनुष्य को अवश्य यातना होती है सो हे स्वामिन् ! शास्त्र से पराङ्मुख दीन मनुष्यों को देखकर मैं डरती हूँ इसलिये वे शठ अपनी इच्छानुसार चलनेवाले मनुष्योंका आप उद्धार बतावें ॥ ४ ॥

महादेवउवाच ॥ साधुपृष्टंत्वयादेविक्षेत्रपा
पकृतांनृणां ॥ निस्तारःस्याद्यथामंक्षुप्राय
श्चित्तेनयेनहिं ॥५॥ प्रायश्चित्तविहीनानां
यातनाबहुदुःखदा ॥ ६ ॥

पार्वती के इस प्रकार श्रद्धायुक्त वचन सुनकर श्रीमहादेवजी बोले, हे देवि! आपने अच्छा पूँछा है क्षेत्र में पाप करने वाले मनुष्यों के लिये जिस प्रकार से निस्तार हो वही प्रायश्चित्त वर्णन करता हूँ प्रायश्चित्त रहित जीवको अवश्य बहुदुःख देनेवाली यातना होती है ॥५॥६॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेनप्रायश्चितंसमाचरेत् ॥
जैगीषव्योमुनिश्रेष्ठस्तपस्वीमत्परायणः ॥७॥

इससे यत्न पूर्वक प्रायश्चित्त करे मुनियों में श्रेष्ठ तपस्वी, शिवभक्त जैगीसव्य मुनि करके मैं जिस प्रकार पूंछा गया हूँ सो कथा सुनो ॥७॥

तेनपृष्टोहमागत्यशिष्यार्थंतद्दयालुना ॥
स्तुत्वामांवैदिकैःसूक्तैःस्मार्त्तैःपौराणिकैःशुभैः ॥८॥
प्रसन्नंमांमुनिर्ज्ञात्वावचनंचेदमब्रवीत् ॥

एक समय जैगीसव्य मुनि मेरे पास शिष्यार्थ आकर वेदमंत्र सूक्त और स्मृति पौराणिक मंत्रों से मेरी स्तुति करके मेरे को प्रसन्न किया जब मैं प्रसन्न होता भया! तब जैगीसव्य मुनि बोले ॥ ८ ॥

जैगीसव्युवाच ॥ किंचिद्विज्ञप्तुकामोहं
देवदेवदयानिधे ॥९॥
आज्ञयाप्रवदाम्यज्ञःसर्वज्ञस्यतवाग्रतः ॥
मयाचोक्तोवदस्वेतित्वंमद्भक्तःप्रियःशुचिः ॥१०॥

हे देवदेव ! हे दयानिधे !! मेरी आप से कुछ जानने की इच्छा है हे महाराज ! यदि आप आज्ञादें तो मैं अज्ञान आप से पूछूँ ; तब हे पार्वती ! मैं प्रसन्न होकर बोला, तुम हमारे भक्तहो पूँछो ॥ ९ ॥ १० ॥

अदेयंतवनास्त्यद्यनिर्वाणाद्यपियाच्यताम् ॥
यस्तुमांसर्वभावेनभजतेकोपिमानवः ॥ नत
स्यादेयमस्तीहत्रैलोक्येसचराचरे ॥ ११ ॥

तुम्हारे लिये मोक्षभी मांगने पर अदेय नहीं है; जो मनुष्य मुझे सर्वभाव से भजते हैं उनको इस त्रैलोक्य में आदेय वस्तु कोई नहीं है ॥ ११ ॥

जैगीषव्युवाच ॥ अयंममदुराचारःशिष्यः
पापरतःसदा ॥१२॥

जैगीसव्यमुनि बोले हे महाराज ! यह मेरा शिष्य दुराचारी सदा पापरत है ॥ १२ ॥

काश्यांवसन्नपिमदात्कृत्याकृत्यंनवेतियत् ॥
शिक्षितोबहुधास्माभिर्बहुधाताड़ितोपिच ॥१३॥

काशी में वास करते भी मुझसे कृत्याकृत्य को नहीं जानता मैंने साम, दाम, दंड, भेद से बहुत समझाया पर इसको ज्ञान न हुआ ॥ १३ ॥

परदारपरद्रोहरतःपरधनापहृत् ॥
पिशुनःपापनिरतोवेश्यागृहनिवासकृत् ॥१४॥

यह दुष्ट सदा परस्त्री, परसे द्रोह, परधन के हरने में रत पापी वेश्याके गृह में वास करनेवाला है ॥ १४ ॥

पितृमातृगुरुद्रोहीविप्रमित्रध्रुगेवच ॥

किंबहूक्तेनदेवेशपापनिर्वचनंमया ॥१५॥

पिता, माता, गुरू, ब्राह्मण, मित्रादि सब मनुष्यों का बैरी यह है, हे देवेश ! इसके पाप मैंने आपसे कहे ॥ १५ ॥

नशक्यतेलज्जयास्यकर्तुर्यद्ब्राह्मणेह्यसौ ॥
मयानिष्कासितःपाप आश्रमात्स्वाततोगतः॥१६॥

हे देवदेव ! में लज्जा करिके अब इसके कर्म आपके सामने नहीं कह सकता हूँ; इस प्रकार के पापी को मैंने अपने आश्रम से बाहर निकाल दिया ॥ १६ ॥

किंचित्किंचिच्चेष्टितंहिज्ञात्वाश्रुत्वापि शिक्षितः ॥ नकरोतियदाकिंचिच्छिक्षितंनिंदतस्त्वयम् ॥१७॥

इस दुष्ट के कर्म सुनकर व जानकर मैं शिक्षा भी देता रहा पर इस पापीने शिक्षा न ग्रहण किया ॥ १७ ॥

तदावाग्व्यवहारोपित्यक्तःसर्वात्मनामया ॥
मत्सन्निधौविनयवग्वेश्याचारोबहिःसदा ॥१८॥

तब मैंने वाक् व्यवहार भी त्याग दिया मेरे सामने तो नम्रता की वाणी बोले और बाहर वेश्याचारी था ॥ १८ ॥

इतिपौरमुखाच्छ्रुत्वाचेष्टितंतस्यदुर्मतेः ॥
मत्सन्निधानाद्गच्छत्वंनोचेच्छप्स्यामिदुष्कृत॥१९॥

इस प्रकार के कर्म पुरवासियों के मुख से सुनकर मैं बोला कि हे दुष्ट ! मेरे इस आश्रम से तू चला जा नहीं तो

श्राप दे दूँगा ॥ १६ ॥

मत्तःपठित्वाशास्त्राणिधर्मज्ञानमयानिच ॥
करोषिनित्यंतत्कर्मयेनलोकःपराङ्मुखः ॥२०॥

तू मुझसे अनेक शास्त्र व धर्म ज्ञान पढ़कर भी कर्म करता है जिनसे लोक (संसार) परङ्मुख हो जाता है ॥२०॥

बहुधासर्वलोकेभ्यःश्रुत्वादुर्विनयंतव ॥
त्यक्तोमयायथेच्छत्वंगच्छवातिष्ठवाधुना ॥२१॥

मैंने लोकसे तेरी दुर्विनय सुनी है मैं तुझे त्यागता हूँ तेरी इच्छा हो जा या रह ॥ २१ ॥

इत्युक्तःसमयाशिष्योलज्जितःपापकृत्तमः ॥
गंतुंमतिंस्वांकृतवान् विहायान्यत्रकाशिकाम्॥२२॥

जब मैं इस प्रकारसे कहा तब लज्जित पापकर्म करनेवाला पापी काशीपुरी को छोड़कर बाहर जाने की मति किया।२२।

काशींपरित्यज्यगतोविदूरंविन्ध्याद्रिकूटंसम
वाप्यचायम्॥ तपश्चचाराशुविशुद्धिकारणं
वर्षत्रयंपत्रतृणादिभुक्परम् ॥२३॥

काशीपुरी को त्यागकर थोडी दूर विन्ध्याचल पर्वत पर जाकर पत्र फूल, फल, घास खाकर शीघ्र शुद्धि के लिये तीन वर्ष तपस्या करता भया ॥ २३ ॥

त्यक्त्वाद्रिकूटंचततःप्रयातोगोदावरींभीमर

र्थीततोपि ॥ तत्रापितप्त्वासुचिरंधृतव्रतो
नशर्मलेभेसुकृतैकसाध्यम् ॥२४॥

तीन वर्ष के बाद विन्ध्याचल को छोड़ गोदावरी, भीम-रथी नदी में जाकर तपस्या किया व्रत को धारण किये पर भी कल्याण न प्राप्त हुआ ॥ २४ ॥

ततःश्रीशैलमगमद्द्रष्टुंस्वामिनमव्ययम् ॥
स्थितमग्रेविभुंस्कंदंददृशेनतवात्मजम् ॥२५॥

तब श्रीशैलपर्वत (जहां पर अव्यय स्वामिकार्तिकजी वास करते हैं तहांपर) के दर्शन करने को गया वहांपर हे महादेव ! आपके पुत्र स्वामिकार्त्तिकजी को देखता भया ॥ २५ ॥

तत्रैववसतिंचक्रेतपःशुद्धंचकारच ॥
काश्यांकृतानांपापानांशुद्धयेधर्मवृद्धये ॥२६॥

तब तो वहीं पर बास करता भया और काशी में किये पापों की शुद्धि के लिये तपस्या करने लगा ॥२६॥

एवंबहुतिथेकालेह्यगस्त्यःकुंभसंभवः ॥
काशीविरहदुःखेनविह्वलःसमुपागतः ॥२७॥

कुछ काल के बाद काशी के विरह से दुःखित कुंभसम्भव अगस्त्य जी उसी आश्रम में आते भये ॥२७॥

हाकाशिकाशिहाकाशिकाशिहेकाशिकेतिच ॥
वहुधाव्याकुलोभूत्वापठन्स्कंदमुपागतः ॥२८॥

अगस्त्य ऋषि हा काशि ! हा काशि !! हा काशि !!! शब्द करते भये अतिव्याकुल स्वामिकार्त्तिकजी के पास प्राप्त भये ॥२८॥

वारंवारंश्रवणतःकाशीनामामृतस्यहि ॥
मयादृष्टःकाशिवासीह्यगस्त्यःस्कंन्दएवच ॥२९॥

काशी नाम अमृतरूपी यह शब्द सुनकर काशीवासी अगस्त्य और स्वामिकार्त्तिकजी को मैंने देखा ॥२९॥

नानातपोभिरत्युग्रैर्नमयास्कन्दईक्षतः ॥
काशीनामानलेनाशुदग्धपापोहिदृष्टवान् ॥३०॥

नाना प्रकार के अति उग्र तपस्या करिकै स्कन्दजी को मैंने न देखा और काशी नाम रूपी अग्नि से जल्दी पाप जल गये और स्वामिकार्त्तिकजीको देखता भया ॥३०॥

इतिमामुक्तवान्पूर्वपुनःपृष्टोमयात्वयम् ॥
पुनरूचेतयोःशुद्धंसंवादंकाशिसंमतम् ॥३१॥

हे महाराज ! यह कथा पहिले आपने मुझसे कही है पर फिर पूँछता हूँ उन दोनों का काशी के सम्मत विवाद आप कहिये ॥३१॥

अगस्त्यमागतंदृष्ट्वास्कंदःप्रीतमनाभवत् ॥
स्कंद उवाच ॥ आगच्छगच्छमांशीघ्रंप
रिष्वज्यमहामुने ॥३२॥

अगस्त्यजी को आते हुये देखकर स्वामिकार्त्तिकजी

प्रसन्न होते भये और मिलकर बोले हे महामुने ! आओ २ शीघ्र आओ ॥३२॥

काशिकाविरहात्त्वांतुजानेव्याकुलमानसम् ॥
ज्ञानिनामपिधीराणांयोगिनांसुतपस्विनाम् ॥३३॥

मैं जानता हूँ कि आप काशी के विरह से व्याकुल हैं, ज्ञानी धीर तपस्या करनेवाले योगी जनों को भी ॥३३॥

काशीविरहजदुःखंबाधतेविदुषांकिल ॥
जडानांदेहगेहादिप्रीतियुक्तमनोधियाम् ॥३४॥

काशी विरह दुःख बाधा करता है देह गेह आदि की प्रीति में युक्त ऐसे जड़ पंडितों को क्या कहैं ॥३४॥

अन्यप्रदेशवत्काशीभातिनित्यंदुरात्मनाम् ॥
त्वंकाशवासतत्वज्ञःशंकरार्चनतत्परः ॥३५॥

अन्यदेशों से काशी नित्यही शोभायमान है और आप तो काशीवास तत्वज्ञाता शिवपूजन में रत हैं ॥३५॥

देवैःस्वकार्यनिरतैःकर्मरूपैर्विवासितः ॥
काश्यांवसतियःकश्चित्काशींपश्यतियश्चाहि॥३६॥

अपने कार्य में तत्पर कर्मरूप में बासना हैं जिनकी ऐसे मनुष्य जो काशी में बास करते हैं और जो काशी को देखते हैं ॥३६॥

काशींस्मरतियःकश्चित्सपूज्योममसर्वदा ॥

इत्युक्त्वापूजितस्तेनस्वामिनामुनिसत्तमः ॥३७॥

जो मनुष्य काशीपुरी को स्मर्ण करते हैं वो पुरुष मुझ करिके सदा पूज्य हैं इस प्रकार काशी का माहात्म्य कहकर स्वामिकार्त्तिकजी अगस्त्य ऋषिका पूजन करते भये॥ ३७॥

दत्वाचमनपानादिसर्वंपप्रच्छकुंभजम् ॥
स्कन्दउवाच ॥ वदस्वागस्त्यशुद्धात्म
न्किंकामंकरवामते ॥ नचास्मद्दर्शनंप्राप्य
शोचितुंत्वमिहार्हसि ॥३८॥

स्कन्दजी आचमन पान आदिक देकर पूँछते भये स्वामि कार्त्तिकजी बोले हे अगस्त्य ! हे शुद्धात्मने !! कहो आप का क्या काम है मेरे दर्शन को प्राप्त होकर आप शोचकरने योग्य नहीं हो ॥ ३८ ॥

अगस्त्य उवाच ॥ जयदेवमहादेवतनया
नंददायक ॥ वाराणसींप्रापयस्वयदितु
ष्टोसिषण्मुख ॥ ३९ ॥

अगस्त्यजी बोले हे जयदेव ! हे महादेवतनयानन्ददायक !! हे षट्मुख !!! यदि आप मेरे पर प्रसन्न हैं तो काशीपुरी में मुझे प्राप्त करो ॥ ३९ ॥

स्कंद उवाच ॥ त्वंप्राप्स्यासिमहाबुद्धे
विघ्नांतेकाशिकांशुभाम् ॥ तवापिकर्म
गहनंकाशींत्यक्त्वात्रतिष्ठसि ॥४०॥

स्वामिकार्त्तिकजी बोले, आपके कर्म अतिगहन हैं जो काशीपुरी को त्याग करके यहां आये हे महाबुद्धे ! विघ्न के अन्तमें काशीपुरी को प्राप्त होगे ॥४०॥

नज्ञायतेसूक्ष्मतरंहिकिंचित्कर्मास्तिलोक
स्यसुदुर्विभाव्यम् ॥ योगादियज्ञादितपो
भिरुग्रैर्युक्तस्यतेसंप्रतिनास्तिकाशी ॥४१॥

सूक्ष्मतर काशी को न जानना संसार के दुर्विभाव्य कर्म हैं; योग यज्ञ उग्र तप करिकै युक्त तुमको काशी युक्त नहीं है ॥४१॥

नज्ञायतेसूक्ष्मतरंहिपुण्यंनीचोपिकाश्यां
तनुभृत्सदास्ते ॥ देवादयोपिप्रभवंतिनैव-
स्थातुंक्षणंकाशिकायांकुगर्वाः ॥४२॥

शरीर धारण किये नीच मनुष्य की भी पुण्य को सूक्ष्म तर न जानना, जिस वाराणसी में देवादिक क्षणमात्र भी स्थित होने को नहीं समर्थ हैं और देवता लोग यह स्तुति सदैव किया करते हैं ॥४२॥

विश्वेशविश्वेशशरण्यशंभोनान्यागति
स्त्वत्पादाब्जंविहाय ॥ अनेकतापार्दित
मानसानामस्माकमाकांक्षितदानदक्ष ॥४३॥

हे विश्वेश ! हे विश्वेश्वर !! हे शंभो !!! आपके चरण कमल छोड़कर मुझको और गति नहीं है अनेक तापों से पीड़ित

है मन मुझको आप आकांक्षा करो ॥ ४३ ॥

त्वयाकृतेयंजनतापशांतयेप्रायामृतंपापयि तुंजनानाम् ॥ नजातिशीलंसुकृतंवापिपृष्ठ्वा ज्ञानामृतंयच्छसिशंकरश्रुतौ ॥४४॥

मनुष्यों को जनताप शांति के लिये प्रायः अमृत नहीं होता, हे शंकर ! शील और सुकृति को जानकर अमृत आप प्राप्त करते हैं ॥ ४४ ॥

पुराणशास्त्रश्रुतिधर्मशास्त्रविद्भिर्नृभिर्गदि तंधर्मसाध्यम् ॥ आशामात्रंसाधनंनःकृपा लोनोवाधर्मसांख्ययुक्तंतयोवा ॥ दीनानहंका रविकारहीनान्प्रयातिकाशीपतिरादृतात्मा ॥४५॥

पुराण, शास्त्र, श्रुति, धर्मशास्त्रादि के जाननेवालों करिकै धर्म साध्य कहा गया है हमारे हे कृपालु! आशामात्र साधन हैं सांख्ययुक्त धर्म नहीं है, इससे हे विभो ! दीन अहंकारविकार से हीन को काशी प्राप्त करो ॥ ४५ ॥

दीनानाथैकशरणंक्षेत्रंक्षेत्रज्ञाधिष्ठितम् ॥ प्राप्यतेनिरहंकारैराशाशतविवर्जितैः॥४६॥

दीनानाथों के एक शरण क्षेत्र के जाननेवाले शिव के शरण में सैकडों आशाओं से बर्जित निरहंकार करिकै मुझे प्राप्त करो यह स्तुति सदैव देवता करते हैं ॥ ४६ ॥

अगस्त्य उवाच ॥ प्रमादाद्यदिसूक्ष्मंवा

स्थूलंवापातकंनृभिः ॥ कृतंकाश्यांतारका
रेकथंतस्याशुनिष्कृतिः ॥४७॥

अगस्त्यजी बोले हे महाराज ! यदि मनुष्य से लघु वा बृहत् पाप प्रमादबस काशी में हो गये हों तो शीघ्र उसकी निष्कृति क्या है ॥ ४७ ॥

स्कन्द उवाच ॥ अविमुक्तेकृतानांतुपापा
नांकुंभसंभव ॥ नदृष्टानश्रुतावापिसाक्षा
च्छिवमुखादपि ॥ निष्कृतिंस्थूलसूक्ष्मा
णांशिवोवेत्तिनचापरः ॥४८॥

श्रीषट्मुख स्वामिकार्त्तिकजी बोले हे कुंभसम्भव ! अवि मुक्त से किये पापों की निष्कृति हम साक्षात् शिवमुख से भी न देखा और न सुना है साक्षात् शिवजी को छोड़ सूक्ष्म व बृहत् निष्कृति दूसरा नहीं जानता ॥ ४८ ॥

जैगीषव्य उवाच ॥ इतिशुत्वास्कंदमुखा
ज्जातत्रासःस्वयंपुनः ॥४९॥

जैगीषव्यमुनि बोले स्वामिकार्त्तिकजी के मुख से इस प्रकार के बचन सुनकर पुनः दुःख प्राप्त होते भया ॥४९॥

सहसामामथागत्यप्रार्थयामासशंकर ॥
मयापिनश्रुतादृष्टाक्षेत्रपापकृतांनृणाम् ॥५०॥

हे शंकर ! मैं भी आपसे प्रार्थना करता हूँ कि क्षेत्र में पाप करनेवालों की निष्कृति न सुना न देखा ॥ ५० ॥

निष्कृतिःशर्वसर्वेशब्रूहिचेदस्तिशंकर ॥५१॥

हे शर्व ! हे सर्वेश !! यदि निष्कृति है तो आप मुझसे कहें ॥ ५१ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ जैगीषव्यमुनेत्वंमेभ
क्तःपरमतापसः ॥ श्रुतिस्मृतिपुराणज्ञः
काशीतत्वविदांवरः ॥५२॥

हे जैगीसव्य ! हे मुने !! तुम मेरे परमभक्त अतितपस्वी हो श्रुति, स्मृति, पुराण के ज्ञाता और काशीतत्त्व के जाननेवाले हो ॥ ५२ ॥

तवाग्रेकथयिष्यामिकाशीमाहात्म्यसुत्तमम् ॥
प्रायश्चित्तमास्तिकिंचित्क्षेत्रपापकृतांनृणाम्॥५३॥

आपसे उत्तम काशीमाहात्म्य कहेंगे, कुछ क्षेत्र में पाप करनेवाले मनुष्यों का प्रायश्चित्त है सो भी कहेंगे ॥५३॥

अस्तिचैकंसुगोप्यंहित्वदग्रेकथयाम्यहम् ॥
प्रायश्चित्तंनान्यदस्तिमुनेगानंविनाक्वचित् ॥५४॥

एक सुगोप्य प्रायश्चित्त है वह आपसे कहते हैं हे मुने ! अज्ञानी को इससे अधिक प्रायश्चित्त नहीं है ॥ ५४ ॥

ज्ञानंचदुर्लभंनृणांविषयासक्तचेतसाम् ॥
तज्ज्ञानंकाशिकायांहिसाक्षाद्भवतिदेहिनाम् ॥५५॥

विषयासक्तचित्त मनुष्य को जो ज्ञान अतिदुर्लभ है वही ज्ञान काशी में मनुष्य को होता है ॥ ५५ ॥

देहाभिमानिनांसौख्यंऋषिणामपिदुर्लभम् ॥
अत्रानन्दवनेज्ञानंआच्छादयतिदुर्मतिः॥५६॥

देहधारियों को सौख्य ऋषियों को दुर्लभ उस ज्ञान को इसकाशीपुरी में दुष्टमति मनुष्य आच्छादन करते हैं॥५६॥

स्वल्पेनाच्छाद्यतेज्ञानंअंगुल्यासूर्यवत्खलु ॥
तस्मात्त्वमिवयोधीरसभवेत्ज्ञानभाजनम् ॥५७॥

जैसे अँगुली से सूर्य को कोई आच्छादन करे उसी प्रकार लघुयत्न से ज्ञानी को अज्ञान आच्छादन करते हैं इससे जो पुरुष आपके सदृश हैं वो पुरुष ज्ञान के वेत्ता होते हैं ।५७॥

न जितेंद्रियतालोके न वैराग्यंतपोपि न ॥
विविक्तसेवासत्संगश्रवणाद्यपिदुर्लभम् ॥५८॥

लोक (संसार) में जितेन्द्रिता नहीं वैराग्य, तप भी नहीं, एकान्त सेवा सत्संग श्रवणादिक तो दुर्लभ ही हैं ॥५८॥

अन्यान्यपिमुमूक्षूणांसाधनानिमहांतिच ॥
भवंतिकानिचिद्दूषनचान्यत्रादृतात्मनाम् ॥५९॥

और भी मोक्षसाधन करनेवाले महात्मा जो आत्मा को आदर किये हैं हे ऋषे ! वो क्या हैं ॥५९॥

भवंतिकाश्यांसफलानितानिमोक्षावसा
नानिसुसाधनानि ॥ सदासदानन्दवने
ममालयेमयासहायेनसुसाधितानि ॥६०॥

हे मुनि ! काशी में वोई कर्म सफल होते हैं जो इस आनन्दवन वाराणसी में मेरी सहायता करके मोक्षान्तकर्म साधन किये जाते हैं वही कर्म सफल होते हैं ॥ ६० ॥

काश्यांस्थितानांजंतूनांअविचारितकर्मणाम् ॥
नसुखंनपराशांतिस्तस्मात्काश्यांविचार्यकृत् ॥६१॥

वाराणसीपुरी में जो मनुष्य अविचार से कर्म करते हैं उनको न सुख है न परम शांतिही है इससे विचार कर कर्म करना चाहिये ॥ ६१ ॥

न सुखमाप्नोतिपरमंपरांशांतिंप्रयातिहि ॥
किंपुनःकाशिकामध्येपापंकृत्वासुखीभवेत् ॥
ब्रह्महत्यादिपापानांप्रायश्चित्तंहिकाशिका ॥६२॥

जो मनुष्य विचार पूर्वक कर्म करते हैं उनको परम सुख और परम शांति प्राप्त होती है, प्रायश्चित्त विहीन मनुष्य को कहीं भी शांति नहीं मिलती ॥ ६२ ॥

किंपुनःकाशिकामध्येपापंकृत्वासुखीभवेत् ॥
ब्रह्महत्यादिपापानांप्रायश्चित्तंहिकाशिका ॥६३॥

हे मुनि ! फिर मैं क्या कहूँ कि काशीपुरी में ब्रह्महत्यादि पापों के प्रायश्चित्त करके मनुष्य सुखी होता है ॥ ६३ ॥

काशिकायांकृतेपापेप्रायश्चित्तंनविद्यते ॥
प्रायश्चित्तविहीनानांयातनास्तिसुदारुणा ॥६४॥

जिनने काशी में किये पापों का प्रायश्चित्त नहीं किया है उस

को अवस्य यमयातनाओं से दारुण दुःख मिलता है ॥६४॥

ज्ञानस्वरूपाकाशीयं पंचक्रोशपरीमिता ॥

तस्याःप्रदक्षिणांकृत्वानरःपापैःप्रमुच्यते ॥ ६५ ॥

पांचकोश में ज्ञानस्वरूप काशी है इस पांचकोस के प्रदक्षिणा करके नर (मनुष्य) सर्व पापों से छूट जाता है ॥६५॥

ममब्रह्ममयंलिंगंआपातालात्समुत्थितम् ॥

सत्यलोकोपरिगतमत्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥ ६६ ॥

मेरा ब्रह्ममयालिंग पाताल से सत्यलोक पर्यन्त है सो काशी में दश अँगुल स्थित है ॥ ६६ ॥

आजन्मसंचितैःपापैर्मुच्यतेतत्प्रदक्षिणात् ॥

क्षेत्रेकृतानांपापानांप्रायश्चित्तंनचेतरत् ॥ ६७ ॥

जिसकी प्रदक्षिणा करने से अनेक जन्म के संचित पापों से मनुष्य छूट जाता है क्षेत्र में किये पापों का प्रायश्चित्त नहीं है ॥ ६७ ॥

प्रदक्षिणद्वयंकृत्वादशजन्मकृतादघात् ॥

मुक्तोभवतिपापात्मासद्योमोक्षमवाप्नुयात् ॥६८॥

जिस लिंग के दो वार प्रदाक्षिणा करने से दश जन्म के संचित पाप छूटते हैं और शीघ्रही मोक्ष प्राप्त होता है ॥६८॥

शुभकृद्यदिकुर्याद्धिमोहात्पापंनतस्यतत् ॥

क्षेत्रंप्रदक्षिणीकृत्यभवेत्पापोहिविज्वरः ॥६९॥

यदि शुभकर्म करनेवाला मनुष्य मोहबस पाप किया

तो क्षेत्रकी प्रदक्षिणा करनेसे पापरहित होताहै ॥ ६९ ॥

प्रदक्षिणत्रयंकृत्वापापंजन्मशतार्जितम् ॥
विलयंचप्रयात्येतन्नात्रकार्याविचारणा ॥ ७० ॥

तीनवार के प्रदक्षिणा करनेसे सौजन्म के संचित पाप नाश होजाते हैं इसमें विचार करनेयोग्य नहीं है ॥७०॥

यावज्जीवंवसेत्काश्यांप्रत्यब्दंसुप्रदक्षिणम् ॥
कर्यादेवनिरालस्योह्यानन्दसदनस्यहि ॥७१॥

जो पुरुष काशीमें जब तक रहे तब तक प्रतिवर्ष काशी क्षेत्रकी निरालस्य होकर प्रदक्षिणा करे ॥७१॥

प्रत्यब्दंयेप्रकुर्वंतिपंचक्रोशप्रदक्षिणम् ॥
जीवन्मुक्तास्तुतेज्ञेयानिष्पापाःकाशिवासिनः॥७२॥

अथवा प्रतिवर्ष पंचक्रोशपरिमित काशी की प्रदक्षिणा करतेहैं वे काशीवासी पुरुष अवस्य जीवन्मुक्त हैं ॥७२॥

इति ब्रह्मवैवर्ते तृतीयभागे पंचक्रोशीमाहात्म्ये
द्वितीयोध्यायः ॥ २ ॥

इति श्री उन्नाव प्रदेशान्तर्गत बरौंडाग्राम निवासि
पं० आनन्दमाधव दीक्षितात्मज
पं० महाराजदीन दीक्षितेन भाषा
वार्तिककृते ब्रह्मवैवर्ते तृतीय
भागे पंचक्रोशीमाहात्म्ये
द्वितीयोध्यायः ॥ २ ॥

श्रीमहादेव उवाच ॥ अत्रैवोदाहरंतीम
मितिहासंपुरातनम् ॥ ऋषिःकूष्मांडत
नयोमंडपःसंगदोषतः ॥ १ ॥

श्रीमहादेवजी बोले हे जैगीसव्य! अब हम पूर्वसमय की कथा वर्णन करते हैं सुनो; कूष्मांड ऋषि के पुत्र मंडप संगदोष से ॥ १ ॥

बालएवममक्षेत्रेपापंचरातिवेदवित् ॥
पित्रानिवारितोमात्राभ्रात्राश्रोत्रियवंशजः ॥२॥

बालक ही मेरे क्षेत्रमें वेद के जानने वाला पिता माता भाई वन्धु के मने करनेपर भी पापका आचरण करताथा ॥

असत्संगंत्यजतिनोविषयासक्तमानसः ॥
परदारपरद्रव्यपरद्रोहरतःसदा ॥ ३ ॥

विषय में आसक्त है मन जिसका सो मंडप असत्संग को न त्यागता भया दूसरे का धन दूसरे की स्त्री पर मनुष्य से बैर करने में तत्पर रहता था ॥ ३ ॥

परापवादकुशलोवेदवादविवर्जितः ॥
यथायथावयस्तस्यवृद्धिंप्रापसुदुर्मतेः ॥ ४ ॥

जिसप्रकार उसकी वय (अवस्था) बढ़ती थी उसीप्रकार परनिन्दा में कुशल वेदवाद से वर्जित दुष्टमति ॥ ४ ॥

तथातथापररतःसत्संगविमुखःसदा ॥
अपवित्रैस्त्रिभिर्मित्रैःसंवृतोराजवेश्मनि ॥ ५ ॥

पापरत सतसंग से विमुख होता भया अपवित्र तीन मि-त्रों सहित राजगृह में प्रवेश करके ॥ ५ ॥

प्रविष्टोधनमादायचौर्येणसविनिर्गतः ॥
वेश्यागृहेतन्निक्षिप्यतयासहदिवानिशम् ॥ ६ ॥

चौर्यवृत्ति से धन लेकर बाहर निकलता भया और वे-श्या गृह में जाकर धन देकर दिनरात उस वेश्या के साथ रमण करने लगे ॥ ६ ॥

रमतेमंडपोविप्रःपितृविप्रत्वनाशकः ॥
कदाचिद्रममाणोसौतृषार्तःसमपद्यत ॥ ७ ॥

किसी समय पिता के विप्रत्वनाश करने के लिये वह ऋषिपुत्र मंडप वेश्यागृह में रमण करते २ प्यास से पीड़ित होता भया ॥ ७ ॥

मञ्चाधस्ताम्रपात्रस्थांगृहीत्वापीतवान्सुराम् ॥
जलबुध्यापातकंतज्जातंतदविचारतः ॥ ८ ॥

शैया के नीचे ताम्रपात्र में मदिरा रक्खी थी उसीको ले-कर जल बुद्धि से पान कर लिया तब तो अविचार से पात-क युक्त होकर ॥ ८ ॥

किमेतद्धिमयापीतमितिवेश्यांसपृष्टवान् ॥
तमाहसामयानीतंसुरापात्रंसुसौख्यकृत् ॥ ९ ॥

वेश्या से पूँछने लगा हे प्रिया! मैंने क्या पान किया? तब तो वेश्या बोलती भई कि आनन्द के देनेवाली मदिरा

मैं लाई थी ॥ ६ ॥

त्वदर्थेसंभृतंमद्यंपुनःपिवसकृत्सकृत् ॥

इतिवेश्यावचःश्रुत्वाधिग्धिक्पापंमयाकृतम् ॥१०॥

आपही के लिये वह मदिरा थी आप फिर थोडी २ पीवें इस प्रकार के वचन वेश्या के सुनकर मैंने पाप किया मुझको बारम्बार धिक्कार है ॥ १० ॥

वेश्यासंगेनमदिरापीताब्राह्मणसूनुना ॥

मंडपस्यततोमित्रद्वयमासीत्सुदुःखितम् ॥ ११ ॥

ब्राह्मणपुत्र ने वेश्या के संग से मदिरा पान किया यह सुनकर मंडप के दोनों मित्र अतिदुःखी हुए ॥ ११ ॥

वेश्यामुखात्सुरापानंतस्यश्रुत्वाजगर्हतुः ॥

आदौविप्रस्ततोस्माकंसंगीपापरतःसदा ॥ ॥१२॥

तिसके बाद वेश्या के मुख से मदिरा पान ब्राह्मणपुत्र का सुनकर अतिनिन्दा करने लगे, देखो आदि में ब्राह्मण फिर हमलोगों का मित्र, सदापापरत ॥ १२ ॥

सुरापानंततोजातंततस्त्वंकिंकरिष्यसि ॥

आच्छादयावःपापंतेसुवर्णंदेहिनोबहु ॥ १३ ॥

इसपर भी तुमने मदिरा पान किया यह चरित्र अति निन्दित है; इस पाप के ढाकने के लिये बहुतसा सुवर्ण हमको देव ॥ १३ ॥

तथेत्युक्त्वापुनर्वेश्यागारंगत्वाप्रविश्यसः ॥

सुवर्णंयाचयामासताडयामासतंचसा ॥ १४ ॥

संगियों के ऐसे वचन सुनकर वेश्या से सुवर्ण माँगने लगा तब तो वेश्या अतिकुपित होकर मंडप को ताडना देने लगी ॥ १४ ॥

वेश्योवाच ॥ वराकममलीलायाःस्वादंज्ञा
त्वापिमूर्खवत् ॥ सुवर्णंयाचसेकिंत्वंलक्षमा
त्रंकियन्मम ॥१५॥

वेश्या बोली, रे मूर्ख ! मेरी लीला का सुख जानकर भी मूर्ख की भांति सुवर्ण याचना करता है तुम्हारा लक्षमात्र सुवर्ण मुझको क्या है ॥ १५ ॥

चुंवनेचुंवनेलक्षंबहुभ्यःप्राप्तमद्यवै ॥
त्वंमयोपेक्षितोदीनोदत्वाप्रार्थयसेधनम् ॥१६॥

आजतक मैं एक २ चुंबन में लक्ष २ सुवर्णमुद्रा प्राप्त की हैं तुम मेरी अनपेक्षासे धन देकर फिर प्रार्थना करते हो ॥१६॥

कामशास्त्रंत्वयामूढपठितंनकदाचन ॥
यतोलीलांनजानासिममकन्दर्पमोहिनी ॥१७॥

रे मूढ़ ! तुमने कभी कामशास्त्र क्या नहीं पढ़ा ? इसीसे मेरी कन्दर्पमोहिंनीलीला को नहीं जानते ॥ १७ ॥

गच्छगच्छसुखेनाशुयावद्दास्योनसंतिमे ॥
ताडयिष्यन्तिसर्वास्त्वांनिर्लज्जंब्राह्मणाधम ॥१८॥

तुम यहां से सुख पूर्वक शीघ्र चले जाओ यदि अपना

कल्याण मानते हो तो, नहीं अभी तुम निर्लज्ज ब्राह्मण अधम को मैं अपने सेवकों से पिटाऊँगी ॥ १८ ॥

वेश्यागृहात्ततस्तूर्णंक्षुधितोपिपिपासितः ॥
पितुःसकाशमगन्मातुश्चाप्रियकाम्यया ॥१६॥

इस प्रकार के वचन सुनकर ऋषिपुत्र मंडप क्षुधा और पिपासा से व्याकुल माता की प्रीति करके पिता के स्थान को जाता भया ॥ १६ ॥

पृष्ठतोदारकौप्राप्तौमित्रत्वेपरिकल्पितौ ॥
वदंतौदेहिकनकंअस्मदंशंत्वमाशुवै ॥२०॥

पीछे से दोनों दारक जो मित्रता में कल्पना किये गये थे सो भी चलते भये और कहते क्या हैं तुम हमारा हींसा सुवर्ण का दो ॥ २० ॥

राज्ञोगृहाद्यदानीतंस्तेयेनास्माभिरुत्तमम् ॥
इतिश्रुत्वापितातस्यमहादुःखसमन्वितः ॥२१॥

जो राजगृह से हमलोग चोरी करके लाये थे उस सुवर्ण का हिस्सा दो ऐसे वचन दारकों के सुनकर मंडप का पिता अतिदुःखी होकर बोलता भया ॥ २१ ॥

उवाचदारकौभीतःकौयुवांकेनकर्मणा ॥
कौभवंतौकथंसंगःकृतोनेनदुरात्मना
तद्धिरण्यांहिकुत्रास्तेयदर्थंवांव्यवस्थितौ ॥२२॥

तुम लोग कौन हो? और किस कर्म करके डरे हुए हो? इस

दुष्ट से कैसे संग किया ? और वह सुवर्ण कहां हैं ? जिसके लिये तुम दोनो मनुष्य आये हो ॥ २२ ॥

दारकावूचतुः ॥ अहंकुविन्दस्त्वत्पुत्रोमंडपोनापितस्त्वयम् ॥२३॥

दोनो दारक बोले मैं कुविन्द आपका पुत्र हूँ मंडप आपका नहीं है ॥ २३ ॥

मैत्रीत्रयणांसंजातादैवाद्दोषत्रयात्मिका ॥
नविभज्यभागाःसर्वैर्हिग्राह्याइतिविधिःकृतः ॥२४॥

दैवबस मेरी तीनों आदमियों की मित्रता हुई और सब सुवर्ण लेकर किसीको भाग न देकर ॥ २४ ॥

अनेनवेश्याभवनेनिक्षिप्तंसर्वमेवहि ॥
सानप्रयच्छतिमुनेवेश्यावादविवादिनी ॥२५॥

इसने वेश्यागृह में रखदिया हे मुने ! सो वेश्या मांगने पर नहीं देती ॥ २५ ॥

अतःपरंराजगृहंगतव्यंवक्तुमेवहि ॥
देहिदापयवास्माकंधनंशीघ्रहिदुःखदम् ॥२६॥

हे ऋषिराज ! मेरे भाग का सुवर्ण शीघ्र मिले नहीं तो मैं राजगृह में जाकर कहूंगा ॥ २६ ॥

नोचेत्तवात्मजःसाधोशूलप्रोतोभविष्यति ॥
रक्षपुत्रंतथास्मांश्चस्वात्मानमपिचानघ ॥२७॥

यह आपका पुत्र नहीं है जारपुत्र है हमलोग आपके

पुत्र हैं मेरी रक्षा करो ॥ २७ ॥

कूष्मांडउवाच ॥ आगच्छतमयासार्द्धंरा
जराजस्यसन्निधौ ॥ पुत्रंगृहीत्वाऽगच्छा
मिशास्त्यर्थंधर्मतोयथा ॥२८॥

कूष्मांडजी बोले मेरे साथ तुम सब लोग राजगृह को चलिये पुत्र मंडप को लेकर मैंभी चलताहूँ शासनके लिये॥२८॥

राजभिःकृतदंडास्तुशुध्यातिमलिनानराः ॥
अनिर्वेशकृतःपापागच्छंतिनरकंमृताः ॥२९॥

राजा करिके दंड दिये मलीन नर शुद्ध होते हैं विना दंड पाये मनुष्य मरने पर नरक को जाता है ॥ २९ ॥

दारकावूचतुः ॥ पुत्रंसमर्पयमुनेकिमर्थं
त्वंगमिष्यति ॥ राज्ञाग्रहंविवादार्थंनगं
तव्यंकदाचन ॥३०॥

दारक बोले हे मुने ! आप पुत्रको अर्पण करें किस प्रयोजन के लिये राजगृह को जावेंगे कभी भी विवाद के लिये राजगृह (कचहरी) में न जाना चाहिये ॥ ३० ॥

कूष्मांडउवाच ॥ भवत्सहनसवंधइत्यु
क्त्वानीयतांसुतः ॥ नोचेदहंगमिष्या
मिराजवेश्यसुनिश्चितम् ॥३१॥

कूष्मांडजी बोले, आप अतिसहनशील हैं और योग्य वचन कहते हैं आप पुत्र मंडप को लेजाँय राज्यगृह को मैं

नहीं जाऊँगा ॥ ३१ ॥

दाराकावूचतुः ॥ त्वयासहनसंवंधोदेहि मित्रद्रुहंशठम् ॥ अस्माभिरेवगंतव्यंत्वंज्येष्ठस्तिष्ठलज्जितः ॥३२॥

दारक बोले, आप अतियोग्य हैं माहात्मा हैं आप इस दुष्ट पुत्रको दें हमलोगभी जाते हैं आप यहीं रहें ॥ ३२ ॥

कूष्माड उवाच ॥ पुत्रगच्छद्विजश्रेष्ठद्विज कृत्यंत्वयाकृतम् ॥ प्रायश्चित्तंविधायाशु राज्ञादत्तंनचान्यथा ॥३३॥

कूष्मांडजी बोले, हे पुत्र ! हे द्विजवर ! ! आप ब्रह्मदंड को शीघ्र करना राजगृह न ले जाना ॥ ३३ ॥

आगंतव्यंत्वयावत्सनोचेद्याहियथासुखम् ॥ तावन्नाहंतवपितानसुतस्त्वंममाघवान् ॥३४॥

हे पुत्र ! तू इनके संग सुखपूर्वक जा तब तक न तेरा मैं पिता हूँ न तू मेरा पुत्र है जब तक न लौटकर आवैगा॥३४॥

ईश्वरउवाच ॥ जैगीषव्यमुनिश्रेष्ठतेन विप्रेणमंडपः ॥ समर्पितस्तयोःपुत्रस्नेह मुन्मुच्यदूरतः ॥३५॥

श्रीमहादेवजी बोले, हे जैगीसव्य ! हे मुनिश्रेष्ठ ! ! कूष्मांड ने पुत्रस्नेह छोडकर मंडप पुत्रको उन दारकों के अर्पण करदिया ॥ ३५ ॥

धार्मिकाणांधनैःपुत्रैःकलत्रैःकिंप्रयोजनम् ॥
धर्मसंग्रहशीलानांयतस्तेकाशिवासिनः ॥३६॥

धर्मधारियों को क्या धन क्या पुत्र क्या कलत्र इनसे क्या प्रयोजन है धर्म के संग्रह करनेवाले काशी वासी हैं ॥३६॥

पुत्रोभ्रातापितावापियःकाश्यांपापमाचरेत् ॥
त्याज्यएवसपापात्माभवेत्संसर्गजाद्भयम् ॥ ३७ ॥

पिता, पुत्र, भाई बन्धु जो कोई हो यदि पाप आचरण करे तो त्याग करदे पापी के संसर्ग से पापका भय लगता है ॥ ३७ ॥

तंनीत्वातौदूरदेशंताडयामासतुक्रमम् ॥
सताड्यमानोमूर्च्छांतुप्रापमृत्युसमांमुने ॥ ३८ ॥

दोनों दारक मंडप को दूरदेश में लेजाकर दंड देना शुरू किया हे मुने ! मंडप दुःखी में प्राप्त मृत्यु सम होकर मूर्च्छा में प्राप्त भया ॥ ३८ ॥

मृतोयमितिचोत्सृज्ययतुस्तौविषएणवत् ॥
पश्चात्तापेनसंयुक्तावसिसंगमसन्निधौ ॥ ३९ ॥

वे दोनों दारक यह अब मरजायगा यह विचार ताप से संयुक्त अस्सी नदी के संगम में छोडकर ॥ ३९ ॥

त्यक्त्वाविप्रसुतंभीतौगतौसिद्धेश्वरालयम् ॥
तत्रोषित्वातुतांरात्रिंदुःखितौक्षुधितौभृशम् ।४०॥

वह दोनो दारक डरे हुये सिद्धेश्वर महादेवजी के मंदिर में

जाकर क्षुधित रात्रिभर वास करते भये ॥ ४० ॥

पश्चात्तापपरौतौतुपुनरन्वेषितुंगतौ ॥
मृतोवाजीवतितुवाज्ञात्वादेशंत्यजावहे ॥ ४१ ॥

आपस में विचार करने लगे कि, देखो अस्सीसंगम पर मंडप को छोड दिया है मर गया या जीवित है ॥४१॥

यावद्विचारणपरावगतावसिसंगमे ॥
तावद्द्विजसुतोभीतोगतमूर्च्छःप्रतस्थिवान् ॥४२॥

इस प्रकार विचार करते थे कि मंडप डरता हुआ प्राप्त भया॥४२॥

पंचक्रोशात्मकस्यैवशिवलिंगस्यतद्दिने ॥
प्रदक्षिणंप्रकुर्वंतिशिवमाहात्म्यवेदिनः ॥४३॥

शिव माहात्म्य के जाननेवाले उसी दिन पंचक्रोशात्मक शिवलिंग की प्रदक्षिणा करके ॥४३॥

क्षेत्रप्रदक्षिणकृतांतत्संगेनविनिर्गतः ॥
तस्मिन्दिनेकर्दमेशसन्निधौयात्रिणःस्थिताः॥४४॥

कर्दमेश्वर महादेव के निकट यात्री लोग स्थित थे आप भी वहीं पर रह जाते भया ॥४४॥

सोपिवत्रस्थितोविप्रोमंडपोमंडपोभवत् ॥
रात्रौजागरणंतेनकृतंनृत्यंशिवाग्रतः ॥४५॥

मंडप रात्रि में वहां पर रहकर जागरण और नृत्य किया॥४५

सर्वैःप्रोत्साहितःसाधुसाधुसाध्वितिसाध्विति ॥

अयंपरमशैवस्यकूष्मांडस्यतुमंडपः ॥४६॥

सब यात्रीगण परम शैव कूष्मांणका पुत्र मंडप को देखकर साधु २ कहने लगे ॥४६॥

पुत्रःशिवव्रतधरःसाधुनृत्यतिगायति ॥
नतस्यचेष्ठितंकोपितन्मध्येवेत्तितत्त्वतः ॥४७॥

यात्री लोग मंडप के कर्म को न जानते हुये यह वचन कहैं कि यह अतिशिवव्रतधारी है ॥४७॥

अतएवादृतःसद्भिर्भक्तिंदृष्टावहिर्गताम् ॥
सोपिचारुविचित्रांगःसर्वेषांसुमनोहरः ॥४८॥

सज्जन यात्री लोग बाहर की सद्भक्ति देखकर आदर करने लगे मंडप भी अतिविचित्र था ॥४८॥

वभूवसद्भक्तिपरःसंत्संगेनद्विजोत्तमः ॥
विचार्यमनसिह्येवंशिवभक्त्यासतांप्रियः ॥४९॥

सत्सङ्ग करिकै मंडप सतसंगति में तत्पर होते भया और मनमें विचार करने लगा ॥४९॥

ततोस्मिदुष्टोपिसदापंचपातकसंयुतः ॥
साधुवादसतांह्येषोभवतिप्रत्यहंमम ॥५०॥

मैं सदा दुष्टकर्म करनेवाला पांचपातकों से सदैव युक्त ऐसे मुझको नित्य साधुवाद मिलता है ॥५०॥

धनधान्यादिलब्धिश्चभोजनाच्छादनानिच ॥

अनायासेनलभ्यंतेऋजुमार्गेणनित्यदा ॥५१॥

हे शिव ! अनायास सीधे मार्ग करिकै धन, धान्य, भोजन, आच्छादन आदिक मिलते हैं ॥५१॥

शिवभक्तिःसतांतुष्टिर्देहपुष्टिनिराकुला ॥
येनमार्गेणभवतिसमार्गःसर्वसंमतः ॥५२॥

जिससे शिव महादेव में भक्ति, सज्जनों में तुष्टि और देह को पुष्टि जिस मार्ग से मिलै वही मार्ग सदैव पूज्य है।५२।

एवंविचारयन्सोथचंडिकांप्रापमंडपः ॥
तत्रपूजांभीमचंड्यांकृत्वाकाशिनिवासिभिः ॥५३॥

यह विचारकर मनमें काशीवासियों के साथ भीमचंडी में जाकर और देवी भगवती का पूजन करके ॥५३॥

ब्राह्मणैर्भोजितःसम्यगादृत्यशिवभक्तिकृत् ॥
उपविष्टास्ततोरात्रौदेव्याःपुरतआदरात् ॥५४॥

ब्राह्मणों करके भोजन किया और उस रात्रि में देवी के सामने आदर से बास करते भया ॥५४॥

क्षेत्रमाहात्म्यकथनंश्रवणंचक्रुरुत्सुकाः ॥
नतोविष्णुजनाःशैवाःकीर्त्तनंचक्रुरादृताः ॥५५॥

नित्यहीं क्षेत्र माहात्म्य कहना और श्रवण करता था। यात्री लोग भी शिव कीर्त्तन करते थे ॥५५॥

तन्मध्येमंडपःशौंडोनृत्यंगानंचकारह ॥

साधुवादेनमहतापुनस्वैःसाधुसत्कृतः ॥५६॥

यात्रियों के मध्य में मंडप नाचता गाता था माहात्मा लोग साधु २ कहते थे ॥५६॥

तस्यापिहिमनोब्रह्मन्छिवेमयिसमाहितम् ॥

अथतृतीयदिवसेगत्वामार्गएवसमंडपः ॥५७॥

उस मंडप का चित्त शिव महादेव में लग जाते भये; और तीसरे दिन भीमचंडी से यात्रा किया ॥५७॥

नृत्यन्गच्छतिगायन्सस्वयमेवशिवस्वयम् ॥

पदेपदेदक्षिणतःक्षेत्रस्यममसद्विजः ॥५८॥

ब्राह्मणों के साथ गान करते हुये क्षेत्र की प्रदक्षिणा करने लगा ५८

ब्रह्महत्यादिपापानांप्रायश्चितंभवेयथा ॥

महादेवमहादेववासुदेवशिवेतिच ॥५९॥

जिससे ब्रह्म हत्यादि पापों का प्रायश्चित्त होता है वही महादेव २ वासुदेव २ शिव २ ॥५९॥

स्मरन्नृत्यत्यभीक्ष्णंससर्वैरपिवहिःकृतः ॥

तृतीयेदिवसेगत्वातंदेहलिविनायकम् ॥६०॥

यह नाम स्मरण करते नाचते गाते तीसरे दिन देहली बिनायक में गया ॥६०॥

पूजयामासुरव्यग्राकाशीभक्तिविवृद्धये ॥

मंडपोलौल्यरहितःशिवनामपरायणः ॥६१॥

यात्री लोगों ने पूजन किया मंडप भी चंचलता से रहित

शिव नाम में परायण काशी भक्ति के वृद्धि के लिये पूजन किया ॥६१॥

वलादन्नमपित्यक्त्वाहरिकीर्त्तनतत्परः ॥
नाश्नातिनपिवत्यंभोनकस्यापिवशेस्थितः ॥६२॥

मंडप भी न अन्न भोजन करना न जलपान करना न किसी के बस में स्थित ॥६२॥

निर्द्वंद्वःसमदृक्शांतोवभूवागतसाध्वसः ॥
ब्राह्मणेनमयास्तेन्यंसुवर्णस्यकृतंरहः ॥६३॥

निद्वन्द, समदृक, शांत ब्राह्मणों के साथ रहते भया॥६३॥

वंचितश्चपितामान्योमातासाध्वीचवंचिता ॥
पापेनोपार्जित्तंवित्तंवेश्यावेश्मनितिष्ठति ॥६४॥

मंडप कहते भया कि मुझसे पिता ठग गये, और माता ठग गई मैंने पाप किये पापही वृत्ति से धन इकट्ठा किया और वेश्या गृह में रक्खा ॥६४॥

मनसाविप्रहननंगमनंभर्तुरेवच ॥
संपन्नंचसुरापानंसाक्षाद्वेश्यागृहेणाकिम् ॥६५॥

मन से विप्र का हतन परिपूर्ण मदिरापात्र का वेश्या गृह में पान ॥६५॥

आहारोमैथुनंनिद्रामिथ्यावादादयोपिहि ॥
जाताममवराकस्यकथंपापपरिक्षयः ॥६६॥

आहार मैथुन निद्रा मिथ्यावादा विवाद मुझ मूर्ख के

कैसे नाश होंगे ॥६६॥

अनुतापैःसुसंतप्तोमडपोमंडवर्जितः ॥
क्षेत्रप्रदक्षिणंकुर्वन्निःपापःसमपद्यत ॥६७॥

अनेक तापों से तापित मंडप काशी क्षेत्र की प्रदक्षिणा करने से निःपाप होजाते भया ॥६७॥

क्वचिद्रुदतिसंस्मृत्यसंस्मृत्यस्वाघसंचयम् ॥
क्वचिद्धसतिक्षेत्रस्यप्रदक्षिणकृदित्यहम् ॥६८॥

नित्य काशी क्षेत्र की प्रदक्षिणा करते मंडप अपने सब आचरण अस्मर्ण करके कभी हँसता था कभी रोता था ।६८

काशीकाशीतिकाशीतिशिवशंकरकेशव ॥
पाहिमांपतितंदीनंगुरुदेवापराधिनम् ॥६९॥

नित्यही यही वचन कहता था कि काशी, काशी, शिव, शंकर केशव, मुझ अपराधी दीन को पालन करो ॥६९॥

रामेश्वरंसमागम्यस्नात्वासंतर्प्यदेवताः ॥
रामेश्वरंसमभ्यर्च्यसोमनाथंतथार्च्यह ॥७०॥

रामेश्वर महादेव में जाकर पूजन किया और सोमनाथ महादेव का भी पूजन करके ॥७०॥

रामंराजीवपत्राक्षंसीतालक्ष्मणसंयुतम् ॥
नभुंक्तेनपिबत्यंभोनृत्यगीतादितत्परः ॥७१॥
प्रार्थ्यमानोपिगृण्हातिनकिंचिदपिखेदकृत् ॥
ततःप्रचलितासर्वेयात्रिणःशिवतत्पराः ॥७२॥

न भोजन न पान नृत्यगान में तत्पर किसी के कहने पर भी कोई चीज न गृहण करना मंडप इस प्रकार सर्व यात्रियों के साथ, कमलवत है नेत्र जिनके ऐसे रामचद्र, सीता लक्ष्मण से युक्त रामेश्वरजी के पूजन करके चलते भया ७१।७२

मंडपोपिस्मरन्काशींशिवंविष्णुंप्रतास्थिवान् ॥
वृषभध्वजमागत्यस्नात्वावैकापिलेह्रदे ॥७३॥

मंडप भी काशी विश्वनाथ श्रीविष्णुजी का स्मर्ण करते वृषभध्वज महादेव में जाकर कपिलधारा में स्नान किया ७३

देवंसंपूज्यविधिवत्स्थित्वातत्रचपूर्ववत् ॥
तत्रःप्रभातेवरुणासंगमेस्नानमप्यच ॥७४ ॥

देव वृषभध्वज का पूजन करके पूर्ववत् वास किया और प्रातःकाल ही वरुडासंगम स्नान करके ॥ ७४ ॥

गताःसर्वेविश्वनाथंद्रष्टुंश्रीपार्वतीपतिम् ॥
तत्रस्थित्वामहापूजांकृत्वासर्वेमहाजनाः ॥७५॥

सब यात्रियों के साथ विश्वनाथ पार्वतीपति के पास जाकर बडी भारी पूजा को किया ॥ ७५ ॥

अन्नानिवासोरत्नानिददुःशंकरतुष्टये ॥
मंडपोपितथाकृत्वामोक्षमंडपमध्यतः ॥ ७६ ॥

अन्न, वस्त्र, रत्न सब यात्रियों के साथ महादेवजी की तुष्टि के लिये मंडप भी देते भया ॥ ७६ ॥

साष्टांगप्रणतःप्राहतत्सदोमध्यगोऽघकृत् ॥

मयापापानिसर्वाणिसुमहांतिबहूनिच ॥ ७७ ॥

इस प्रकार पंचक्रोशात्मक शिव की प्रदक्षिणा करके सज्जनों की सभा में जाकर मँडप बोला मैंने अतिपाप किया ॥७७॥

कृतानितत्रवदतनिष्कृतिंममसत्तमाः ॥
यथाहंपापनिर्मुक्तोभवामीहतदुच्यताम् ॥ ७८ ॥

हे सज्जन ! उसकी निष्कृति कहिये जिससे मैं पाप से छूटूँ वही यत्न कहो ॥ ७८ ॥

सदस्या ऊचुः ॥ त्वंनिःपापासिभक्तोसिशिवयोःकेशवस्यच ॥ पंचक्रोशात्मकंलिंगंसत्संगाद्दक्षिणीकृतम् ७९

सभासद बोले, तुमने पंचक्रोषात्मक शिवलिंग की प्रदक्षिणा किया है और शिव विष्णु के तुम भक्तहो इससे अब तुम निष्पाप हुये ॥ ७९ ॥

मैत्रीवाणिज्यमूल्याद्यैःकिंपुनःश्रवणादिभिः ॥
येनकेनापिसुमहत्पापंतस्यनाविद्यते ॥ ८० ॥

मित्रता वाणिज्य श्रवण आदिसे जो पाप लगे हैं वह सब तुमारे छूट गये ॥ ८० ॥

मंडप उवाच ॥ पित्रानिष्कासितःसोहंकथंयास्यामितद्गृहम् ॥ प्रतीतिकरणंकिंवास्तिचेद्गमनेमम ॥ ८१॥

सभासद के इसप्रकार वचन सुनकर मंडप बोला, हे विप्र ! मुझको तो पिता ने घर से निकाल दिया मैं घर को किस प्रकार जाऊँ और पिता को प्रतीत किस यत्न से होगा॥८१॥

प्रेषयंतुतदासभ्याःशास्त्रप्रत्ययसंयुताः ॥
गर्हयंतिगृहस्थानोनोचेत्किंगमनेनमे ॥८२॥
आप मेरे साथ कुछ सभासद करदें प्रतीत के लिये, गृहस्थी अतिनिन्दित है घर जाने से क्या ॥ ८२ ॥
सदस्याऊचुः॥ आकारयस्वपितरंअस्मद्वचनगौरवात् ॥ प्रतीतिंदर्शयामोद्यदंडनाथस्यसन्निधौ८३
मेरे वचन से दंडनाथ के निकट आकार तुम्हारे पिता को प्रतीत होगी ॥ ८३ ॥
महादेवउवाच ॥ मंडपोथगृहद्वारंगत्वाशिवशिवेतिच ॥ महादेवमहादेवेत्यत्क्वातूष्णींव्यवस्थितः ८४
महादेवजी बोले, मंडप इस प्रकार गृहद्वार पर जाकर शिव २ महादेव २ कहकर चुप खड़ा रह गया ॥ ८४ ॥
कूष्मांडःप्राहदयितांकोतिथिर्द्वारिवर्त्तते ॥
पश्यपश्याशुसुभगेशिववाक्शंकरप्रियः ॥८५॥
कूष्मांड प्रिय पत्नी से बोले, हे सुभगे ! दरवाजे पर शिवभक्त कौन अतिथि है देखो ॥ ८५ ॥
साभर्तुर्वचनाद्गत्वादृष्टामंडपमात्मजम् ॥
उवाचवचनंभीताभर्त्तुःपुत्रार्थमातुरा ॥८६॥
पति के वचन सुनकर जल्दी द्वारपर गई तो मंडप प्रिय पुत्र को देखकर डरती हुई पुत्रार्थ आतुर बोली । ८६ ॥
अकृत्वैवचनिर्वेशंकथमागमनंवद ॥ मंडपउवाच ॥

आहूयंतिसदास्यास्त्वांपितरंचममानघ ॥८७॥

आप किस प्रयोजन के लिये आये, आपका रूप कृत्तिम देख पड़ता है यह वचन सुन मंडप बोला मेरे पिता को और आपको सभासदगण बुलाते हैं ॥ ८७ ॥

निर्वेशवार्त्तांवहुलांतएवब्रूयुरग्रतः ॥
जननीमंडपस्याथगत्वाकूष्मांडमब्रवीत् ॥८८॥

आपसे हमारे गृह आने की बार्त्ता कहैंगे, यह वचन सुनकर मंडप की माता कूष्मांडसे बोली ॥ ८८ ॥

पुत्रस्तेकृतानिर्वेशःशिवस्मरणतत्परः ॥
द्वारितिष्ठतिसद्वेषोनातिथिःकश्चनेतरः ॥८९॥

हे महाराज ! आपका पुत्र शिवस्मर्ण में तत्पर द्वारपर स्थित है कोई अतिथि नहीं है ॥ ८९ ॥

कृतनिर्वेशमनयंश्रुत्वापुत्रंतुसद्विजः ॥
उत्थायागत्यसहसाददर्शशिवरूपिणम् ॥९०॥

शिवभजन में तत्पर पुत्रको आया हुआ सुनकर शीघ्र उठकर देखने आये ॥ ९० ॥

रुद्राक्षमालिनंशांतंविभूतिकृतभूषणम् ॥
उवाचकिंसमायातःशीघ्रंपुत्रंतथाघवान् ॥९१॥

रुद्राक्ष, भस्म धारण किये शांतरूप पुत्र मंडप को आया देखकर बोले ॥ ९१ ॥

नहिस्वल्पेनपुण्येनप्रायश्चित्तंमहद्भवेत् ॥ मंडपउवाच ॥ मयावहूनिपापानिकृतानिविविधानिच ९२

थोड़े पुण्य करके महत्पाप का प्रायश्चित्त नहीं होता (मंडप यह शब्द सुन बोला,) मैंने बहुत पाप किये ॥९२॥

नज्ञायंतेत्वयापित्राकिमन्यैर्दूरसंस्थितैः ॥
बलात्वामाह्वयंत्येवसदस्याःशुद्धिदर्शिनः ॥९३॥

हे पिता ! वो पाप दूर से नहीं जानवे योग्य हैं मेरी शुद्धि के देखने वाले सभासदलोग बुलाते हैं आप चलें ९३

यद्वाचतेकुरुतथात्वंमत्स्नेहेनमाव्रज ॥
इतिश्रुत्वामंडपस्यवचःपत्न्यासमन्वितः ॥९४॥

अथवा जैसी आपकी रुचि हो वैसा कीजिये यह वचन सुनकर पत्नी से युक्त ॥ ९४ ॥

मुक्तिमंडपिकांप्रापसदस्यैःसंस्थितांशुभाम् ॥
तैराहूतोद्विजवरैर्धर्माधर्मार्थदर्शकैः ॥९५॥

धर्म अधर्म के देखनेवाले द्विजवरों से बुलाये गये कूष्मांड मुक्तमंडप स्थान को गये ॥ ९५ ॥

उपाविष्टंतमूचुस्तेपुत्रस्तेशुद्धिमागतः ॥ कूष्मांडउवाच ॥ प्रायश्चित्तेनकेनासौशुद्धिंप्राप्तोममात्मजः९६

कूष्मांड को देखकर सभासद बोले तुम्हारा पुत्र शुद्ध हो गया है कूष्मांड बोले किस प्रायश्चित्त करके मेरा पुत्र निष्पाप हुआ ॥ ९६ ॥

प्रतीतिर्ममवाक्यास्याद्यदनेनतुभुज्यते ॥ सदस्याऊ

चुः॥ मुक्तिमंडपिकायास्तुस्वामीविष्णुर्नचापरः ६७

मेरे वचन को प्रतीत हो तो मैं इसके साथ भोजन कर सकता हूँ सभासद बोले, मुक्तिमंडपं स्थान के स्वामी विष्णु हैं ९७

सचेद्वदतिवेदात्मातदाशंकानचोत्तरम् ॥
तत्पार्षदाभानुमुख्याबदिष्यंतिचसत्तम ॥९८॥

यदि वे कहैं तो निश्चय है और उन्हीके पार्षद भानु मुख्या है वह भी कहेंगा ॥ ९८ ॥

तदामन्यस्वसुप्रीतःशास्त्रदेवप्रसादतः ॥
इत्युक्त्वाचसदस्यास्तेतुष्टुवुर्विष्णुमव्ययम् ॥९९॥
रविंढुंढिंदंडपाणिंभैरवंचैवपंचमम् ॥
पंचापितत्रसुप्रीताःमुक्तिमंडपमध्यतः ॥१००॥

तब आप मानना इस प्रकार कहकर अव्यय विष्णु, रवि, ढुंढिराज, दंडपाणि, भैरवँ की स्तुति करने लगे उपर्युक्त देव पांचो प्रसन्न होते भये ॥ ९९ ॥ १०० ॥

प्रादुर्भूतामहात्मानोलोकप्रत्ययकारकाः॥ विष्णुरुवाच ॥ अयंशुद्धोमहापापोमंडपःसाधुसंगतः ॥१॥

संसार के उपकार करनेवाले, पंचदेव प्रकट होकर, विष्णु जी बोले, साधुसंगत यह मंडप शुद्ध है ॥ १०१ ॥

काश्याःप्रदक्षिणंकृत्वाह्यर्चयित्वाजगद्गुरुम् ॥
माहात्म्यश्रवणंजातक्षेत्रस्याशुभनाशनम् ॥२॥
तस्मादयंगच्छतुस्वंगृहंपत्निसमान्वितः ॥

काशीपुरी की प्रदक्षिणा किया और पंचक्रोशात्मक जग

हुरू शिव का पूजन किया, वाराणसीपुरी का माहात्म्य श्रवण किया है इस कारण यह शुद्ध है हे कूष्मांड! इसके साथ घर को जावो ॥ २ ॥

ढुंढिराजोवाच ॥

काशीतिनामजपतांशिवनामतुल्यं विघ्नादिपापानिच योविलयंप्रयाति ॥ किंतत्कथाश्रवणकीर्त्तनवास दानैः सम्यक्प्रदक्षिणवतामशुभस्यनाशः ॥ ३ ॥

ढुंढिराज बोले, काशी नाम जो शिवतुल्य है उसके जपने वाले के सम्पूर्ण विघ्न नाश होते हैं फिर मैं क्या कहूँ कि जो मनुष्य श्रवण, कीर्तन, वास, दान, काशीक्षेत्र की प्रदक्षिणा करता है उसके परिपूर्ण अशुभ अवश्य नाश होते हैं॥३॥

दंडपाणिरुवाच ॥ काश्यांपापंयेप्रकुर्वंति पापास्तेषांदुःखंजायतेवश्यमेव ॥ शंभो लिंगसच्चिदाकाशरूपंपंचक्रोशंतत्परिक्रम्यशुद्धः ४

दंडपाणिजी बोले, जो पुरुष काशी में पाप करते हैं उनको अवश्य दुःख होता है परन्तु पंचक्रोशात्मक शिवलिंग की प्रदक्षिणा करने से शुद्ध होजाता है ॥ ४ ॥

भैरवउवाच ॥ कार्यममैतत्खलुपापिनांस दाकरोमिदंडंवहुधावश्यमेव ॥ प्रदक्षिणीकृत्यसमा गतास्त्वयंकाशीविशुद्धोनविचारमस्तितत् ॥५॥

श्रीभैरवजी बोले, मेरा सदैव यही कार्य है कि पापियों

को दंड देना और अपने बस में करना परन्तु जो काशी-पुरी की प्रदक्षिणा किये हैं उनको मेरा दंड नहीं होता और वो शुद्ध हैं ॥ ५ ॥

रविरुवाच ॥ सत्संगतःक्षेत्रसुदक्षिणीकृतं
काशीकथाश्रवणकीर्त्तनादयम् ॥ शुभप्रदंपा
पहरंसुवासदंकृतंचशुद्धोमंडपःसत्यमेव ॥६॥

रविजी बोले, जो सत्संग करिके वाराणसी की प्रदक्षिणा और कथा श्रवण कीर्त्तन करते हैं वो अवश्य शुद्ध हो जाते हैं इससे यह मंडप शुद्ध है ॥ ६ ॥

महादेवउवाच ॥ सभासदैर्देववरैरुक्तोकूष्मांड
मंडपौ ॥ प्रदक्षिणीकृत्यतुतान्नमस्कृत्यपुनःपुनः ॥७॥

श्रीशिवजी बोले, हे जैगीसव्य ! देववरों ने इस प्रकार के वचन कहे तब कूष्मांड और मंडप दोनों पंचदेव की प्रदक्षिणा और नमस्कार बार २ करने लगे ॥ ७ ॥

निःपापौहर्षसंपूर्णौययतुस्तौस्वमालयम् ॥
प्रदक्षिणफलंब्रह्मन्पंचक्रोशात्मकस्यहि ॥८॥

कूष्मांड व मंडप प्रसन्नमन निष्पाप अपने घर को जाते भये हे मुने ! पंचक्रोश का यह माहात्म्य है ॥ ८ ॥

लिंगस्ययन्मयाप्रोक्तंसुगोप्यंपुरुषार्थदम् ॥
श्रुहामत्वत्स्यमतुलंपचक्रोशात्मकस्यच ॥९॥

मुझ करके पंचक्रोशात्मक शिवलिंग का माहात्म्य जो

कहा गया उसे जो करेंगे व सुनेंगे वे अवश्य शुद्ध हो जायगें ९

लिंगस्यदक्षिणाकार्यात्वयाशिष्येणचानघ ॥
इतिश्रुत्वाप्रसन्नात्माजैगीषव्योमहामुनिः॥१०॥

हे मुने ! अब तुम शिष्यों को साथ लेकर वाराणसी की प्रदक्षिणा करो, यह वचन महादेव के सुन प्रसन्नमन जैगीसव्य ऋषि ॥ १० ॥

देवंप्रदक्षिणीकृत्यनमस्कृत्यपुनःपुनः ॥
जगामपंचक्रोशस्ययात्रार्थंशिष्यसंयुतः॥११॥

देव महादेव की प्रदाक्षिणा करके शिष्यों के साथ पंचक्रोश यात्रा के लिये जाते भये ॥ ११ ॥

पंचाभिर्दिवसैःकृत्वायात्रामत्रागतोमुनिः ॥
उपविष्टोविधिःसम्यक्यात्रायाःपापनाशनः॥१२॥

पांच दिन में पंचक्रोश यात्रा करके मुनिजी लौट कर आते भये ॥ १२ ॥

मयापुण्यकृद्देवापिनिर्विघ्नफलदायकः ॥
मुनिरागत्यविश्वेशंभवान्यासहितंतदा ॥१३॥

मुझ करके हे देव ! पंचक्रोश यात्रा की गई यह कहकर विश्वनाथ पार्वती सहित को पूजन किया ॥ १३ ॥

पूजयामासविधिवदुपचारैःसुविस्तरैः ॥
शिष्योगुरुप्रसादेननिःपापोपुण्यवान्सुधीः॥१४॥
जातःस्कंदप्रसादेनशुत्वामाहात्म्यमुत्तमम् ॥

शिष्यों के साथ गुरुप्रसाद से निष्पाप जैगीसव्य ऋषि अनेक विधि से शिव का पूजन करते भये स्वामिकार्त्तिक के प्रसाद से और उत्तम माहात्म्य श्रवण करके यह सौभाग्य प्राप्त भया ॥ १४ ॥

महादेवउवाच ॥ एतत्तेकथितंदेवकाश्यांयत्पातकंकृतम् ॥ तस्यप्रणाशनंशुद्धंप्रायश्चित्तंसुदुर्लभम् ॥१५॥

महादेवजी बोले, हे मुने! जे पुरुष काशी में पाप करते हैं उस पाप के नाश के लिये यत्न अतिदुर्लभ है सो मैंने तुमसे कहा है ॥ १५ ॥

श्रुत्वाध्यायमिमंपुण्यंसर्वपापप्रणाशनम् ॥
नरःशुद्धिमवाप्नोतिकाशीवासंचगर्भहृत् ॥११६॥

इस पुण्य अध्याय की कथा को जो सुनैंगे व सुनावैंगे उनके सम्पूर्ण पाप नाश होकर शुद्ध हो जायँगे काशीवास गर्भ के हरणे वाला है ॥ ११६ ॥

इतिश्रीब्रह्मवैवर्त्तेतृतीयविभागे
पंचक्रोशीमाहात्म्येतृतीयोध्यायः ।

इतिश्री उन्नाव प्रदेशान्तर्गत वरौंड़ाग्राम निवासि पंडित आनन्दमाधव दीक्षितात्मज पं० महाराजदीन दीक्षितेन भाषाव्याख्या कृते ब्रह्मवैवर्त्ते तृतीयभागे काशी पंचक्रोशी माहात्म्ये तृतीयोध्यायः ॥३॥

ऋषयऊचुः ॥सूतसूतमहाबुद्धेवदविद्याविशारद ॥
यथाप्रदक्षिणाकार्यामनुजैर्विधिपूर्वकम् ॥१॥

ऋषि लोग बोले हे सूत! हे महाबुद्धे !! हे विद्याविशारद !!! जिस प्रकार मनुष्यों करिके पंचक्रोश की प्रदक्षिणा कीजाय ॥१॥

स्थानंवासस्यवदनोभक्ष्यचाभक्ष्यमेवच ॥
पूजांसीास्मिनास्थितानांचदेवानांदानमेवच ॥
यथासंपूर्णतामेतियात्राक्षेत्रस्यसत्तम ॥२॥

अस्थान वास भक्ष्य अभक्ष्य और देवतों की पूजनविधि परिपूर्ण विधि पूर्वक मेरे पर कृपा करके कहो ॥२॥

सूतउवाच ॥एवमेवपुराप्टष्ठोभगवान्शिवयाशिवः॥
तत्ब्रमीमिमुनिश्रेष्ठाःशृणुएवंतुविधिवन्मम ॥३॥

सूतजी बोले आप जिस प्रकार का प्रश्न किया है, उसी प्रकार पार्वती ने महादेव से पूँछा था वही हे मुनिश्रेष्ठ! मैं वर्णन करता हूं सुनों ॥३॥

श्रीदेव्युवाच ॥भगवन्देवदेवशप्रदाक्षिणाविधिं
वद॥पंचक्रोशस्ययेनासौनिष्पापःपुण्यवान्भवेत् ४

श्री पार्वतीजी बोलीं हे भगवन् ! हे देवदेव !! बाराणसी प्रदक्षिणा की विधि कहो काशी की प्रदक्षिणा करके मनुष्य निष्पाप हो पुण्यवान होतेहैं ॥४॥

श्रीमहादेव उवाच ॥आश्विनादिषुमासे

षुत्रिषुपार्वातिसत्तमे ॥५॥

श्री महादेवजी बोले, हे पार्वती ! आश्विन को आदि लेकर तीन मास में ॥५॥

प्रदक्षिणाप्रकर्तव्याक्षेत्रस्यापापकांक्षिभिः ॥

माघादिचतुरोमासाःप्रोक्तायात्राविधौनृणाम्॥६॥

निष्पाप होने के लिये क्षेत्र की प्रदक्षिणा करे और माघ को आदि लेकर चार मास में मनुष्यों की यात्रा विधि कहते हैं ॥६॥

पूर्वस्मिन्दिवसेढुंढिंपूजयित्वाहविष्यभुक् ॥

प्रातरुत्तरवाहिन्यांस्नात्वाविश्वेशमर्चयेत् ॥७॥

प्रथम दिन में (यात्रा के पहिले दिन) ढुंढिराज का पूजन करके और प्रातः काल उत्तर वाहनी गंगा में स्नानकर के विश्वेश्वर विश्वनाथ का पूजन करै ॥७॥

पुनर्यात्रार्थमपिचाशिवयोःपुजनंभवेत् ॥

मुक्तिमंडपिकायांचसंविश्यवरवर्णिनि ॥८॥

हे वरवर्णिनि ! यात्रार्थ विश्वनाथ का फिर पूजन करके मुक्ति मंडपिका को जाय ॥८॥

प्रतिज्ञांमहतींकृत्वापूजनंतत्रतत्रह ॥

काश्यंप्रजातवाक्कायमनोजनितमुक्तये ॥९॥

वहां पर पूजन करके काशी में मन, बुद्धि, वांणी,शरीर से जो उत्पन्न पाप हैं उनके मुक्ति के लिये संकल्प करै ॥९॥

ज्ञाताज्ञातविमुक्त्यर्थंपातकेभ्योहितायच ॥

पंचक्रोशात्मकंलिंगंज्योतिरूपंसनातनम् ॥१०॥

संकल्प में यह कहे कि, ज्ञान से अज्ञान से किये हुये पातकों के नाश के लिये मैं यात्रा करता हूँ और पंचक्रोशात्मक शिवलिंग ज्योतिरूप ॥१०॥

भवानीशंकराभ्यांचलक्ष्मीश्रीशविराजितम् ॥

ढुंढिराजादिगणपैःषट्पंचाशद्भिरावृतम् ॥११॥

पार्वती महादेव से युक्त, लक्ष्मी विष्णु से युक्त, ढुंढिराज आदि ५०६ गणनाथों से युक्त ॥११॥

द्वादशादित्यसहितंनृसिंहैःकेशवैर्युतम् ॥

कृष्णरामत्रययुतंकूर्ममत्स्यादिभिस्तथा ॥१२॥

बारहों सूर्य से युक्त, नृसिंह, केशव, कृष्ण, राम, कूर्म, मत्स्य आदि लेकर ॥१२॥

अवतारैरनेकैश्चयुतंविष्णोःशिवस्यच ॥

गौर्यादिशक्तिभिर्जुष्टंक्षेत्रंकुर्यात्प्रदक्षिणम् ॥१३॥

अनेक अवतारों से युक्त गौरी आदि शक्तियों से युक्त, सुक्षेत्र की प्रदक्षिणा करे ॥१३॥

बध्वांजलिःप्रार्थयीतमहादेवंमहेश्वरीम् ॥

पंचक्रोशस्ययात्रांवैकरिष्येविधिपूर्वकम् ॥१४॥

हाथ जोडे हुये महादेव महेश्वरीकी प्रार्थना करे और विधि पूर्वक पंचक्रोश यात्रा करे ॥१४॥

प्रीत्यर्थंतवदेवेशसर्वाघौघप्रशांतये ॥
इतिसंकल्प्यमौनेनप्रणिपत्यपुनःपुनः ॥१५॥

चलते समय यह प्रार्थना फिर करै कि हे देवेश ! सम्पूर्ण पापों के शांति के लिये और आप के प्रसन्नतार्थ मौन धारण करिकै नमस्कार करै ॥१५॥

ढुंढिराजगणेशानमहाविघ्नौघनाशन ॥
पंचक्रोशस्ययात्रार्थंदेह्याज्ञांकृपयाविभो ॥१६॥

फिर ढुंढिराज गणेश की प्रार्थना करै हे ढुंढिराज ! सम्पूर्ण विघ्नों के शांति के लिये आप के नमस्कार हैं पंचक्रोश यात्रा के लिये कृपाकर आज्ञा दीजिये ॥१६॥

विश्वेशंत्रिःपरिक्रम्यदंडवत्प्रणिपत्यच ॥
मोदंप्रमोदंसुमुखंदुमुखंगणनायकम् ॥१७॥
प्रणम्यपूजयित्वादौदंडपाणिंततोर्चयेत् ॥
कालराजंचपुरतोविश्वेशस्यजगद्गुरोः ॥१८॥
पूजयित्वाततोगच्छेन्माणिकर्णींविधानतः ॥
तत्रस्नात्वामहादेवंमणिकर्णीशमर्चयेत् ॥१९॥

विश्वनाथजी की तीन बार प्रदक्षिणा नमस्कार करके और मोद प्रमोद सुमुख दुर्मुख गणनायक को प्रणाम व पूजन करके दंडपाणि की पूजा करै विश्वेश जगद्गुरु के सामने कालराज का पूजन करके मणिकर्णिका का स्नान विधिवत करै और मणिकर्णिकेश का पूजन करै ॥१७।१८।१९

विनायकंसिद्धिसंज्ञंपुनरागत्यपूजयेत् ॥
मणिकर्णीतटेच्छन्नंगंगाकेशवमच्युत ॥२०॥

फिर सिद्धाविनायक में आकर सिद्धविनायक की पूजा करे मणिकर्णिकान्तरमें ढकेहुये गंगाकेशवका पूजन करे२०

ललिताचयतःपूज्यजरासंधेश्वरंविभुम् ॥
सोमनाथंततःपूज्यदाल्भ्येश्वरमेवच ॥२१॥

ललिता देवी, जरासन्धेश्वर, सोमनाथ,दालभ्येश्वर इनको क्रमानुसार पूजन करके ॥२१॥

शूलटंकेश्वरंलिंगंबराहंपूज्यचव्रजेत् ॥
दशाश्वमेधलिंगंचवंदींतत्रैवपूजयेत् ॥२२॥

शूलटंकेश्वर, लिंगवाराह, दशाश्वमेध लिंग को पूजन करके वंदी देवी का पूजन करै ॥२२॥

सर्वेश्वरंचकेदारंततोहनुमदीश्वरम् ॥
संगमेशंततःपूज्य लोलार्कंपूजयेत्ततः ॥२३॥

सर्वेश्वर, केदारेश्वर, हनुमदेश्वर, संगमेश को पूजनकरके लोलार्क का पूजन करै ॥२३॥

अर्कसंज्ञंगणाध्यक्षंअसेस्तीरेपुनर्व्रजेत् ॥
क्षेत्रप्रदक्षिणांकुर्वन्तिलमात्रंनसंत्यजेत् ॥२४॥

अर्क है संज्ञा जिनकी ऐसे गणाध्यक्ष का पूजन करके अस्सी नदी के तीर को जाय फिर वहां से प्रदक्षिणा करते तिल मात्र भी पृथ्वी को न छोड़े ॥२४॥

दुर्गाकुंडेनरःस्नात्वायजेद्दुर्गविनायकम् ॥
दुर्गासंपूज्यविधिवत्वसेत्तत्रसुखाप्तये ॥२५॥

फिर वहां से दुर्गाकुंडमें स्नान करके दुर्ग विनायक का पूजन करें और दुर्गाजी का पूजन करके रात्रि में वहीं पर वास करें ॥२५॥

ब्राह्मणान्भोजयेत्तत्रमधुपायसलड्डुकैः ॥
रात्रौजागरणंतत्रपुराणश्रवणादिकम् ॥२६॥

रात्रि में ब्राह्मणों को मिठाई, जावर लड्डू भोजन दे और रात्रि में जागरण पुराण आदिक श्रवण करें ॥२६॥

कुर्याच्चकीर्त्तनंभक्त्यापरोपकरणादिच ॥
जयदुर्गेमहादुर्गेजयकाशीनिवासिनि ॥२७॥

भक्ति से जयदुर्गे, महादुर्गे, जयकाशीनिवासिनी यह शब्द करें ॥२७॥

क्षेत्रविघ्नहरेदेविपुनर्दर्शनमस्तुते ॥
इतिदुर्गांप्रार्थयित्वाविष्वकसेनेऽवरंततः ॥२८॥

हे क्षेत्रविघ्नहरे ! हे देवि ! फिर दर्शन देना इस प्रकार दुर्गा देवी की प्रार्थना करके विष्वकसेनेश्वर की पूजन करें ॥२८॥

पुजयित्वाकर्दमेशंपंचव्रीहितिलैर्नमेत ॥
आदौकर्दमतीर्थेषुस्नानंकूपावलोकनम् ॥२९॥

फिर कर्दमेश को यव तिल चढ़ाकर नमस्कार करै पश्चात् कर्दम तीर्थ में स्नान करै ॥२९॥

सोमनाथंविरूपाक्षंनीलकंठततोर्चयेत् ॥
तत्रवासंविधायाग्नौकिंचिद्धोमंद्विजार्चनम् ॥३०॥

सोमनाथ, विरूपाक्ष नीलकण्ठ को पूजन करके रात्रि में वहीं पर वास करै और हवन व ब्राह्मण पूजन करै ॥३०॥

श्राद्धादिविधिकृत्यानिकृत्वामुच्येत्ऋणत्रयात् ॥
कर्दमेशमहादेवकाशीवासजनप्रिय ॥३१॥

वहीं पर श्राद्ध आदिक करने से तीनों ऋण से मनुष्य छूटता है हे कर्दमेश ! हे काशिवासजनप्रिय !! ॥३१॥

त्वत्पूजनान्महादेवपुनर्दर्शनमस्तुते ॥
प्रातःस्नात्वापूजयित्वासमर्च्यचद्विजानपि ॥३२॥

हे महादेव ! आपके पूजन से मुझे फिर भी दर्शन हों यह प्रार्थना करके और प्रातः स्नान कर ब्राह्मणों को पूजन करे ॥३२॥

नागनाथंचचामुंडांमोक्षेशंकरुणेश्वरम् ॥
वीरभद्रंततोदुर्गांविकटास्यांप्रपूजयेत् ।३३॥

नागनाथ, चामुण्डा, मोक्षेश, करुणेश्वर, वीरभद्र, दुर्गादेवी विकट है मुख जिनका ऐसी देवी को पूजन करै ॥३३॥

उन्मत्तभैरवंनीलंकालकूटंततोर्चयेत् ॥
दुर्गांचविमलांनत्वामहादेवंततोव्रजेत् ॥३४॥

उन्मत्तभैरव कालकूट को पूजन कर निर्मल दुर्गा का नमस्कार करके महादेव को जाय ॥३४॥

नंदिकेशंभृंगिरीटिंतत्रैवचगणप्रियम् ॥
विरूपाक्षंचयक्षेशंविमलेश्वरमेवच ॥३५॥

नंदिकेश भृंगिरीटि गणप्रिय विरूपाक्ष; यक्षेश बिमलेश्वर ३५

मोक्षदंज्ञानदंचैवऽमृतेशंतत्रपूजयेत् ॥
गंधर्वसागरंतीर्त्वाभीमचंडींततोव्रजेत् ॥३६॥

मोक्षदेश्वर ज्ञानदेश्वर अमृतेश्वर का पूजन कर गंधर्वसागर को उतर के भीमचण्डी को जाय ॥३६॥

तत्रस्नात्वाभीमचण्डीपयसास्नापयेत्सुधीः ॥
पंचोपचारैःसंपूज्यब्राह्मणान्परितोषयेत् ॥३७॥

वहां पर स्नान करके जावर से भीमचण्डी का पूजन करै पंचोपचार से ब्राह्मणों को प्रसन्न कर रात्रि को वहीं पर वास करके ॥३७॥

तत्रवासंप्रयत्नेनकुर्याच्चचण्डविनायकम् ॥
रविरक्ताक्षगंधर्वंनरकार्णवतारकम् ॥३८॥

वहीं पर चण्डविनायक और रविरक्ताक्ष गंधर्व की पूजा करै ॥३८॥

शिवंप्रपूज्ययत्नेनरात्रौपूर्ववदाचरेत् ॥
प्रातरुत्थायसुस्नातःप्रार्थयेद्भीमचंडिकाम् ॥३९॥

रात्रि में पहिले की भांति आचरण करे और प्रातःकाल

स्नान करके भीमचण्डी देवी की प्रार्थना करे ॥३९॥

भीमचंडीप्रचंडानिममविघ्नानिनाशय ॥
नमस्तस्तुगमिष्यामिपुनर्दर्शनमस्तुते ॥४०॥

हे भीमचण्डी ! मेरे विघ्न नाश के लिये आप के नमस्कार हैं फिर दर्शन देना ॥४०॥

ततोगच्छेदेकपादंगणंनत्वाथतंडुलान् ॥
तिलांश्चविकिरेत्तत्रधनधान्यादिसंपदाम् ॥४१॥

वहां से चलकर एकपाद गण के नमस्कार कर और तिल, चावल, धन धान्य वहां पर दान करे ॥४१॥

ततोगच्छन्महाभीमंभैरवींभैरवींशुभाम् ॥
भूतनाथंचसोमेशंप्रपूज्यासिंधुरोधसि ॥४२॥

फिर वहां से चलकर भैरव, भूतनाथ, सिन्धुरोधा में सोमेश्वर का पूजन करके ॥४२॥

कालनाथंकपर्दीशंकामेशंचगणेश्वरम् ॥
वीरभद्रंचारुमुखंगणनाथंप्रपूजयेत् ॥४३॥

कालनाथ, कपर्दीश कामेश्वर, गणेश्वर, वीरभद्र, चारुमुख गणनाथ की पूजा करे ॥४२॥

ततोगच्छेद्देहलीशंविघ्नपूगनिवारणम् ॥
मोदकैःपृथुकैर्लाजैःसक्तुभिश्चैक्षुपर्वभिः ॥४४॥
पूजयेच्छ्रद्धयादेवंतंदेहलिविनायकम् ॥
तत्पार्श्वेषोडशपुनर्विघ्ननाथान्समर्चयेत् ॥४५॥

इसके वाद अनेक विघ्नों के निवारण करने वाले देहलीश को जाय ॥४४॥

लड्डू, लाई, सतुआ और ऊंखरस से श्रद्धा पूर्वक देहलि विनायककी पूजा करके पासही में सोलह १६ विघ्ननाथोंकी अवश्य पूजा करै ॥४५॥

उद्दंडगणपंपूज्यउत्कलेश्वरमेवच ॥
रुद्राण्यास्तुततोभूमिंद्दष्ट्वारामेश्वरंव्रजेत् ॥४६॥

उदण्डगणप, उत्कालेश्वर को पूजन करके और रुद्राणी पृथ्वी को देखकर रामेश्वर को जाय ॥४६॥

वरुणायांततःस्नात्वातर्पणादिविधानतः ॥
रामेश्वरंश्वेततिलैर्विल्वपत्रादिभिर्यजेत् ॥४७॥

वरुणा नदी में स्नान करके सफेदतिल बेलपत्र आदि सामग्री से रामेश्वर का पूजन करै ॥४७॥

सोमनाथंतुतत्रैवपूजयेदिंद्रदिग्गतम् ॥
भरतेशंलक्ष्मणेशंशत्रुघ्नेश्वरमेवच ॥४८॥

पूर्वदिशा में सोमनाथ, और भरतेश्वर , लक्ष्मणेश्वर शुत्रघ्नेश्वर ॥४८॥

द्यावाभूमीश्वरंतत्रपूजयन्नहुषेश्वरम् ॥
तत्रवासंप्रकल्प्याथपूर्ववज्जागरणादिकम् ॥४९॥

द्यावा पृथ्वीश्वर, नहुषेश्वर आदिलिंग को पूजन करके रात्रि में वहीं पर जागरण आदि करके बास करै ॥४९॥

कृत्वास्नात्वाथरामेशंपूजयेत्काशिवासदम् ॥
श्रीरामेश्वररामेणपूजितस्त्वंसनातन ॥५०॥

श्री रामेश्वरजी की प्रार्थना करे कि हे महादेव ! श्रीराम करके आप पूजन किये गये आपके नमस्कार हैं ॥५०॥

आज्ञांदेहिमहादेवपुनर्दर्शनमस्तुते ॥
लिंगानिसुत्रह्न्यादौवरुणापारगान्यथ ॥५१॥

आप फिर दर्शन देना यह कह और वरुणा नदीके पार जो वहां शिव लिंग हैं उन्हे पूजा करै ॥५१॥

पूजयित्वाततोगच्छेद्देवसंघनिषेवितम् ॥
देवसंघेश्वरंकिंचिद्दत्वास्थित्वाततोव्रजेत् ॥५२॥

वहां से देवसंघ से सेवित देवसंघेश्वर को जाकर दान व पूजन करके चलै ॥५२॥

पाशपाणिंगणेशंचक्षेत्रमध्यव्यवस्थितम्
पूजयित्वावहिश्चैवपृथ्वीश्वरमथोव्रजेत् ॥५३॥

पाशपाणि क्षेत्र मध्य में स्थित गणेश का पूजन करके पृथ्वीश्वर को जाय ॥५३॥

एकोश्वमेधःपृथुना कृतःक्षेत्राद्वहिःपुरा ॥
स्वर्गभूमिस्तुसाज्ञेयामोक्षभूमिस्तुमध्यतः ॥५४॥

पहिले पृथुराजा करके उस जगह पर एक अश्वमेध यज्ञ की गई थी इसमे वह स्वर्ग भूमि कही जाती है क्षेत्र के मध्य में मोक्ष भूमि है ॥५४॥

काश्याश्चतुर्दिशंदेवियोजनंस्वर्गभूमिका ॥
मृतास्तत्रहिगच्छंतिस्वर्गसुकृतिनांपदम् ॥५५

हे देवि ! काशी में चारों दिशा में चार कोश स्वर्ग भूमि है जिस में मरने से स्वर्ग मिलता है ॥५५॥

ततस्तुयूपंहिसरःपृष्ट्वागच्छेच्छनैःशनैः ॥
महाक्षेत्रंकापिलंतुयत्रश्रीवृषभध्वजः ॥५६॥

यूपसर को स्पर्श करके धीरे २ जहां वृषभध्वज कापिलजी हैं वहां जाय ॥ ५६ ॥

तत्रस्नात्वाविधानेनतर्पयित्वापितॄनथ ॥
श्राद्धंविधायसुश्रद्धःपूजयेद्वृषभध्वजम् ॥५७॥

कपिलधारा में स्नान करे और विधिवत पितरों को श्राद्ध करके श्रीवृषभध्वज का पूजन करै ॥५७॥

निवसेत्तंतुदिवसंपुराणादिप्रकल्पयेत् ॥
प्रदक्षिणीकृत्यततोगच्छेज्ज्वालानृसिंहकम् ॥५८॥

वहीं पर वास करके दिन में पुराण आदि सुने व सुनावे फिर प्रदक्षिणा करके ज्वालानृसिंह को जाय ॥५८॥

एवंप्रदक्षिणीकृत्यसरःकापिलमुत्तमम् ॥
वरुणांचततस्तीर्त्वास्नात्वावैसंगमेशुभे ॥५९॥

कपिलधारा की प्रदक्षिणा करके वरुणा संगम को उतर कर स्नान करे ॥५९॥

आदिकेशवमभ्यर्च्यसंगमेश्वरमेवच ॥

विनायकंखर्वसंज्ञंपूजयित्वाततोव्रजेत् ॥६०॥

अदिकेशव, संगमेश्वर, खर्वविनायक की पूजा करके चले ६०

क्रोडीकृत्ययवान्शुद्धान्विकिरन्विष्णुमुच्चरन् ॥

प्रह्लादेश्वरमभ्यर्च्यंत्रिलोचनमतःपरम् ॥६१॥

हाथ में शुद्ध यवन का लेकर विष्णु २ कहते हुये प्रह्ला देश्वर और त्रिलोचन की पूजा करे ॥६१॥

विन्दुमाधवमभ्यर्च्यहृदेपांचनदेशुभे ॥

गभस्तीशंमंगलांचगौरीदृष्ट्वाततोव्रजेत् ॥६२॥

पंचनद में विन्दुमाधव का पूजन करके गभस्तीश और मंगलागौरी के दर्शन करके चले ॥६२॥

वसिष्ठवामदेवौचपर्वतेश्वरमेवच ॥

महेश्वरंसमभ्यर्च्यततःसिद्धिविनाकम् ॥६३॥

वसिष्ठ, वामदेव, पर्वतेश्वर, महेश्वर, सिद्धविनायक को पूजन करे ॥६३॥

सप्तावरणगान्दिव्यान्पूजयेद्गणनायकान् ॥

मणिकर्ण्यांततःस्नात्वागच्छेद्विश्वेश्वरंयमी॥६४॥

गणनायकों की पूजा करते हुये मणिकर्णिका में स्नान करके विश्वनाथ के मंदिर को जाय ॥६४॥

नमस्कृत्यमहेशानंप्रविशेद्देवसान्निधौ ॥

पंचोपचारैःसंपूज्यस्तुत्वानत्वापुनःपुनः ॥६५॥

विश्वनाथजी के नमस्कार करकें पंचोपचार से पूजन नम

स्कार और स्तुति करै ॥६५॥

मुक्तिमंडपमागत्यकृतार्घस्तत्रसंविशेत् ॥
विष्णुंचदंडपाणिंचढुंढिंभैरवमेवच ॥६६॥

मुक्ति मंडप में आकर विष्णु दंडपाणि, ढुंढिराज, भैरव ६६

आदित्यंपंचगणपान्पूजयेत्पुनरेवच ॥
प्रदक्षिणीकृतान्देवान्स्मरेत्तत्तक्रमात्सुधीः॥६७॥

आदित्य पंचगण का पूजन करै और प्रदक्षिणा किये हुये देवतों का फिर स्मर्ण करै ॥६७॥

जयविश्वेशविश्वात्मन्काशीनाथजगद्गुरो ॥
त्वत्प्रसादान्महादेवकृतःक्षेत्रप्रदक्षिणा ॥६८॥

हे विश्वेश ! हे विश्वात्मन् !! हे काशिनाथ !!! हे जगद्गुरो !!!! आपके प्रसाद से काशी क्षेत्र की प्रदक्षिणा किया ६८

अनेकजन्मपापानिकृतानिममशंकर ॥
गतानिपंचक्रोशात्मलिंगसम्यक्प्रदक्षिणात्॥६९॥

हे शंकर ! अनेक जन्मों के सञ्चित मेरे पाप पंचक्रोशात्मक लिंग की प्रदक्षिणा से गये ॥६९॥

त्वद्भक्तिःकाशिवासश्चरहितापापकर्मणा ॥
सत्संगश्रवणाद्यैश्चकालोगच्छतुनःसदा ॥७०॥

काशीवासी जो पापी हैं वे आप की भक्ति से रहित हैं सज्जनों का काल सत्सङ्गति व पुराण आदिके सुनने में जाता है ॥७०॥

हरशंभोमहादेवसर्वज्ञसुखदायक ॥
प्रायश्चित्तंसूनिर्वृत्तंपापानांत्वत्प्रसादतः ॥७१॥

हे हर ! हे शंभो !! हे सर्वज्ञ !!! आपके प्रसाद से पापों से मैं निवृत्त हुआ ॥७१॥

पुनःपापमतिर्मास्तुधर्मबुद्धिःसदास्तुमे ॥
इतिनत्वायथाशक्त्यादत्वादानंद्विजन्मनाम् ॥७२॥

हे महादेव ! अब मेरी पाप में बुद्धि न होय यह कह नमस्कार करे और यथा शक्ति ब्राह्मणों को दान देय ॥७२॥

बध्वाकरयुगंयात्रीमंत्रमेतमुदीरयेत् ॥
पंचक्रोशस्ययात्रेयंयथावद्यामयाकृता ॥७३॥
न्यूनंसंपूर्णतांयातुत्वत्प्रसादादुमापते ॥
इतिप्रार्थ्यमहादेवंगच्छेद्गेहंस्वकंस्वकम् ॥७४॥

यात्री हांथ बाँधकर इस मंत्र को पढे पंचक्रोश यात्रा में जो कुछ न्यून व अधिक किया होय हे उमापते ! वह सब सम्पूर्णता को प्राप्त होय यह प्रार्थना करके अपने २ घर को जाँय ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

न्यूनातिरिक्तदोषाणांपरिहारायदक्षिणाम् ॥
संकल्प्यागत्यचगृहंब्राह्मणान्भोजयेत्ततः ॥७५॥

न्यूनातिरिक्त सम्पूर्णता के लिये घर आकर ब्राह्मणों को भोजन और दक्षिणा देय ॥ ७५ ॥

ततआगत्यचगृहेकुटुम्बैःसहभोजनम् ॥

कृत्वात्मानंततोध्यात्वाकृतकृत्योभवेतत्तः ॥७६॥

घरमें कुटुम्बियों के साथ भोजन करे और आत्मा को ध्यान कर कृत कृत्य होता है ॥ ७६ ॥

एकरात्रंतुमध्येयःप्रवसेच्छुचिमानसः ॥
वरुणायास्तटेरम्येसयातिपरमांगतिम् ॥७७॥

जो पुरुष बरुणा नदी के तटपर एक रात्रि भी बास करता है वह परमगति को प्राप्त होता है ॥ ७७ ॥

द्विरात्रंवसतिमध्येयःकुर्याद्धर्मतत्परः ॥
प्रथमंचांडिकाक्षेत्रेद्वितीयंवरुणातटे ॥७८॥

जो यात्री चण्डिका देवी के स्थान में एक रात्रि बास कर के दूसरी रात्रि बरुणातट में बास करता है वह भी परमगति को प्राप्त होता है । ७८ ॥

दिवसंतुवसेद्धीमान्ततोविश्वेश्वरंव्रजेत् ॥
यस्तुत्रिरात्रमुषितोमध्येभवातिपार्वति ॥७९॥
दुर्गास्थलभीमचण्ड्यांरामेशेवासमृच्छति ॥
वसतिंयस्तुकुरुतेमध्येदिनचतुष्टयम् ॥८०॥

दिनमेंविश्वनाथ और एक रात्रि दुर्गाजी दूसरी रात्रि भीम चंडी तीसरी रात्रि रामेश्वर में वास करता है वह भी मोक्ष पद भागी होता है ॥७९८०॥

प्रथमांवसतिंकुर्यात्कर्दमेश्वरसन्निधौ ॥
द्वितीयांभीमचंड्यांतुरामेशंतुतृतीयकम् ॥८१॥

चतुर्थीकापिलेक्षेत्रेवसतिंप्रतिकल्पयेत् ॥
राजवृद्धकुमाराणांयथेष्टंवासमिष्यते ॥८२॥

अथवा प्रथम दिन कर्दमेश दूसरे दिन भीमचण्डी तीसरे दिन रामेश्वर चौथे दिन कपिलक्षेत्र में वास करता है वह अवश्य मोक्ष होता है इन स्थानों में राजा वृद्ध बालक स्त्री सबको वास करना चाहिये ॥८१॥८२॥

यथाकथंचिद्देवेशिपंचक्रोशप्रदक्षिणम् ॥
कुर्यादेवनमासादिचिंतयेद्धर्मकोविदः ॥८३॥

हे देवेशि ! मैंने तुमसे पंचक्रोश यात्रा विधि कही है वही धर्म के जानने वाले इसी प्रकार करैं ॥८३॥

सएवशुभदःकालोयत्रश्रद्धोदयोभवेत् ॥
श्रद्धाहिदुर्लभालोकेकलौखलुविशेषतः ॥८४॥

अब यात्रा काल कहते हैं, जिस समय श्रद्धा उत्पन्न होय वही काल यात्रा का है कलियुग में श्रद्धा अति दुर्लभ है ॥८४॥

श्रद्धैवतीर्थंदेवाश्चश्रद्धास्वर्गापवर्गकौ ॥
श्रद्धयायत्कृतंसर्वमनंतफलदंभवेत् ॥८५॥

श्रद्धाही से तीर्थ देवताओं का पूजन जो करते हैं उनको अवश्य स्वर्ग अपवर्ग मिलता है कलियुग में जो श्रद्धायुक्त कर्म करता है उसको अनन्त फल मिलता है ॥८५॥

सत्येश्रद्धागुणवतीनासत्येसाफलप्रदा ॥

काश्यावसतियोनित्यंनित्यंस्नातिचजाह्नवीं॥८६॥
कुर्यात्सांवत्सरींयात्रांपंचक्रोशस्यसुन्दरी ॥
सब्रह्मभूतोनिवसन्ममानुग्रहतःसुखी ॥८७॥

सत्यमें श्रद्धा फलवान होताहै असत्यमें नहीं, काशीमें जो नित्य गंगास्नान करते हैं और सालभरमें हे सुन्दरि! पंच क्रोशकी यात्रा करते हैं वो पुरुष ब्रह्ममयहैं मेरे अनुग्रह से सुखीहोकर काशी में वास करते हैं ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

इतिश्रीब्रह्मवैवर्तेपंचक्रोशीमाहात्म्येचतुर्थोध्यायः।४

इतिश्री उन्नावप्रदेशान्तर्गत बरौंदा ग्राम निवासी
पं०आनन्दमाधव दीक्षितात्मज पं०महाराजदीन
दीक्षिते भाषा व्याख्याकृते ब्रह्मवैवर्त्ते
काशी पंचक्रोशी यात्राविधिवर्णनं
नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

देव्युवाच॥ क्षेत्रप्रदक्षिणेदेवनियमाःकेभवंतितान्॥
वदस्वतारिताशेषविश्वनाथकृपालय ॥१॥

श्रीपार्वतीजी बोलीं, हे विश्वनाथ! हे कृपालय!! काशी क्षेत्रकी प्रदक्षिणामें कौन नियमहैं वह विस्तार पूर्वक वर्णन करिये ॥ १ ॥

महादेवउवाच॥प्रतिग्रहंपरान्नंचपरदाराभिभाषणम्॥
परस्वग्रहणंस्नेहादसद्वार्त्तांचवर्जयेत् ॥२॥

श्रीमहादेवजी बोले, दानलेना, परान्न ग्रहण करना दूसरे

की स्त्री से बोलना दूसरे का धन ग्रहण करना स्नेह से असत् बार्त्ता करना मना है ॥२॥

असतांपापिनांसंगंनकुर्यात्प्रयतोनरः ॥
असत्संगमात्सर्वंनिष्फलंजायतेनृणाम् ॥३॥

यत्न से मनुष्य पापी व असत जनका संग न करै असत संग से कर्म किया निष्फल होजाताहै ॥३॥

ममद्रोहपरैःसाकंनव्रजेद्विष्णुनिंदकैः ॥
परापवादंनोकुर्यात्परद्रोहंचवर्जयेत् ॥४॥

हे देवि ! मेरे वैरी व विष्णुनिन्दकों के साथ कदापि यात्रा न करै और दूसरेकी निन्दा न करै ॥४॥

गुरुनिंदांशास्त्रनिंदांशिवधर्म्ममहात्मनाम् ॥
तीर्थलिंगतयोर्निंदांनकुर्यात्तुप्रदक्षिणी ॥५॥

यात्रीलोग गुरू, शास्त्र, महात्मा, तीर्थ, शिवलिंग आदि की निन्दा न करैं ॥५॥

अन्यदातुकृतंपापंनश्येत्क्षेत्रप्रदक्षिणात् ॥
पापंप्रदक्षिणामध्येकृतंकेनप्रनश्यते ॥६॥

दूसरी जगह के किये पाप काशीक्षेत्रकी प्रदक्षिणा करनेसे छूटजातेहैं और जो लोग क्षेत्रकी प्रदक्षिणामें पाप करतेहैं वह नहीं छूटते हैं ॥६॥

ब्राह्मणैःक्षत्रियैःवैश्यैःशुद्रैश्चैवांत्यजातिभिः ॥
कांक्षिभिःपरमंतत्वंकर्त्तव्यंक्षेत्रदक्षिणम् ॥७॥

साधन करते हैं अविमुक्त से परे योग; ज्ञान, दान, जप, तप है ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

क्षेत्रतीर्थादिनियमानसंतिशुभदार्शिनाम् ॥
अविमुक्तंसमासाद्यनत्यजेन्मोक्षकामुकः ॥५७॥
क्षेत्रन्यासदृढंकृत्वावसेद्धर्मपरःसदा ॥

शुभदर्शियों को क्षेत्रतीर्थों के नियम नहींहैं मोक्ष की इच्छा करनेवाला मनुष्य अविमुक्त को प्राप्त होकर कभीभी न छोड़े ॥५७॥

क्षेत्रन्यासपराणांत्वमहमप्यनुकूलजैः ॥५८॥
भोगैःसहायतांयातौदिशावःपरमांगतिम् ॥
यथापतिव्रतानारीभर्तारमनुगच्छति ॥५९॥

धर्म तत्पर मनुष्य क्षेत्रन्यास को दृढ करके क्षेत्र में बसै क्षेत्रन्यास तत्पर मनुष्य को हम और तुम अनुकूल अनेक भोगों करके सहायता के लिये जाते हैं जैसे पतिव्रता नारी पति के पास जातीहै ॥५८॥५९॥

तथासाहसमालंब्यकाशीमनुगतोभवेत् ॥
गुरुद्रोहपरोयस्तुविप्रद्रोहपरस्तथा ॥६०॥
नतस्यकाशीसिध्येतबहुभिःसाधनैर्युता ॥
क्षेत्रसंन्यासिनामेवंक्रमःप्रोक्तोमयानघे ॥६१॥

इसीसे साहस को अवलम्बन करके काशीवास करै गुरु द्रोह और विप्रद्रोह में रत पुरुष को काशीवास अनेक साधना

ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, चांडाल सब करके काशीक्षेत्र की प्रदक्षिणा करने योग्यहै ॥७॥

किंचिद्दानंप्रत्यहंब्राह्मणेभ्योदेयंदीनानाथपं
ग्वंधकेषु ॥ भूमौशय्यातैलमांसादिदुष्टंसर्वं
वर्ज्यंतीर्थयात्रादिनेषु ॥८॥

यात्री प्रदक्षिणा करते नित्य ब्राह्मणको और अंधरे, लूले, कोढीको दानदेय, और पृथ्वीमें सोना, तैल मांस आदिक दुष्ट पदार्थ न भोजन करै ॥८॥

स्नानद्वयंप्रकुर्वीतनित्यश्राद्धंचसुन्दरि ॥
यदत्रकिंचित्क्रियतेकोटिकोटिगुणं भवेत् ॥९॥

हे सुन्दरी ! नित्य दोनों वक्त स्नान करै और श्राद्धकर्म करते रहै क्षेत्र की प्रदक्षिणा के समय जो कर्म करता है वह कोटि गुण को प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

ब्रह्मचारीगृहस्थोवावाणप्रस्थोथमस्करी ॥
क्षेत्रेवसन्वहिर्वापिकुर्यादेवप्रदक्षिणम् ॥१०॥

ब्रह्मचारी, गृहस्थ, बाणप्रस्थ क्षेत्रमें वास करते क्षेत्र की प्रदक्षिणा करै ॥ १० ॥

ब्रह्महत्यादिपापानांप्रायश्चित्तंनचापरम् ॥
वहिःकृतानांपापानांमध्येवापिसुरेश्वरि ॥११॥

हे सुरेश्वरि ! ब्रह्महत्यादि और बाहरके किये सबपापों का एक यही प्रायश्चित्त है ॥ ११ ॥

प्रायश्चित्तांतरंपुंसोनदृष्टंनमयाश्रुतम् ॥
वसंतिदेवाबहवःस्वर्गभूमौवहिःसदा ॥१२॥

बहुत से देवता स्वर्गभूमि के बाहर बसतेहैं पर प्रायश्चित्त किये पुरुष न मैंने देखा न सुना ॥ १२ ॥

मदाज्ञांपालयंत्येववासार्थंदैन्यमागताः ॥
वहिस्थिताःप्रकुर्वंतिदक्षिणांक्षेत्रलब्धये ॥१३॥

काशीवास के लिये जो मेरी आज्ञा का पालन करते हैं वो दैन्यता को प्राप्त होते हैं बाहर स्थित जन क्षेत्र लाभ के लिये प्रदक्षिणा करते हैं ॥ १३ ॥

ममानुग्रहमासाद्यप्रविशंतिहिकाशिकाम् ॥
मदनुग्रहकामैश्चपंचक्रोशात्मकंप्रिये ॥१४॥
लिंगंप्रदक्षिणीकृत्यद्रष्टव्योहंकृपानिधिः ॥
अस्मिन्क्षेत्रेमहादेविपुण्यंपुण्यतरंतुवा ॥१५॥
अनंतकोटिगुणितंभवत्येवनसंशयः ॥
अंतर्गृहेकृतंपापंकेवलंयातनावहम् ॥१६॥

जो पुरुष मेरी अनुग्रह को पाकर काशीमें प्रवेश करते हैं और मेरी अनुग्रहकी कामना करके हेप्रिये! पंचक्रोशात्मक मेरे लिंग की प्रदक्षिणा करके मुझे देखते हैं इस क्षेत्र में जो कोई पुण्य व पाप करते हैं वे कोटिगुण अधिक हो जाते हैं अतः गृहमें किये पाप की यातना होती है ॥१४॥१५॥१६।

अन्यक्षेत्रेकृतंपापंपुण्यक्षेत्रेविनश्यति॥

पुण्यक्षेत्रेकृतंपापंगंगातीरेविनश्यति ॥१७॥

दूसरे क्षेत्र में किये पाप पुण्यक्षेत्र में छुटते हैं पुण्यक्षेत्र में किये पाप गंगाजी के स्नान से नाश होजाते हैं॥ १७ ॥

गंगातीरेकृतंपापंवाराणस्यांविनश्यति ॥

वाराणस्यांकृतंपापंमंतर्गृहेविनश्यति ॥१८॥

गंगातीर में किये पाप वाराणसी में भस्म होते हैं और वाराणसी में किये पाप अंतःगृह में छुटते हैं ॥ १८ ॥

अंतर्गृहेकृतंपापंवज्रलेपोभविष्यति ॥

वज्रलेपच्छिदेंह्येतत्पंचक्रोशप्रदक्षिणम्॥१६॥

अन्तर्गृह में किये पाप वज्रलेप होते हैं उस वज्रलेप पापा के छुटाने के लिये पंचक्रोश की प्रदक्षिणाहै ॥ १६ ॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकुर्यात्क्षेत्रप्रदक्षिणम् ॥

वाराणसींतुसंप्राप्यप्रमादाद्योवहिर्गतः ॥२०॥

सर्वयत्न से पंचक्रोशी यात्रा करें वाराणसी के बाहर जो प्रमाद से चला जाता है॥ २० ॥

दैवात्सपुनरागत्यदक्षिणेनप्रशुद्ध्यति ॥

अविमुक्तंमहाक्षेत्रंसर्वदाजननीयथा ॥२१॥

दैववस फिर आकर अविमुक्त महाक्षेत्रकी प्रदक्षिणा करने से वे शुद्ध होजाते हैं ॥ २१ ॥

पुत्रस्यजननीलोकेसर्वथाहितकारिणी ॥

हितकृत्सर्वजंतूनांकाशीहामुत्रसर्वदा ॥२२॥

जिस प्रकार माता पुत्र की सदा हितकारिणी होती है उसी प्रकार सब मनुष्यों के लिये काशी है ॥ २२ ॥

देव्युवाच ॥ भगवन्सर्वभूतेशकृपापूरितविग्रह ॥
कृतार्थानांवदविभोक्षेत्रसंन्यासिनामपि ॥२३॥

श्रीपार्वतीजी बोली, हे भगवन् ! काशी में कृतार्थ जो सन्यासी हैं उनकी प्रदक्षिणा विधि कहो ॥ २३ ॥

प्रदक्षिणक्रमंक्षेत्राद्बहिर्वामध्यतो पिवा ॥
नियमस्यनभंगःस्याद्यथापापंचनश्यति ॥२४॥

क्षेत्र के बाहर से व मध्य से जिसमें नियम न भंग होय और पाप नाश होजाँय वह विधि कहिये ॥ २४ ॥

देहिनांपापसंबंधःसर्वथाजायतेक्रमात् ॥
तत्काशिवासजंनश्येत्क्षेत्रसन्यासिनांयथा ॥२५॥

देहधारियों को सर्वदा पाप क्रमसे लगजाते हैं जिसमें काशीवासि संन्यासियों को भी, इससे आप कृपा करके कहैं २५

श्रीभगवानुवाच ॥ सम्यक्पृष्टंत्वयादेविम
हाहंकारनाशनम् ॥ प्रायश्चित्तंन्यासिनांहि
क्षेत्राघौघविनाशनम् ॥२६॥

श्रीमहादेवजी बोले, हे देवि तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया महा अहंकार के नाश करनेवाला प्रायश्चित्त कहता हूँ जिससे क्षेत्र में किये पाप नाश होजाँय ॥ २६ ॥

विधिस्तुपूर्वमेवोक्तोनियमादियुतस्तव ॥

प्रदक्षिणक्रमंतथामवधारायसुव्रते ॥२७॥

पहिले तो मैं विधि वर्णन करचुकाहूं अब नियम और प्रदक्षिणा क्रम वर्णन करताहूं हे सुव्रते ! सुनो ॥२७॥

स्नात्वादेवंसमभ्यर्च्यविश्वेशंविश्वयासह ॥

मोदादिपंचकंढुंढिंदण्डपाणिंचभैरवम् ॥२८॥

श्रीगंगाजी में स्नान करके पार्वती सहित विश्वनाथजी की पूजा करै और प्रसन्न मन ढुंढिराज दंडपाणि भैरवनाथ की पूजा करै ॥ २८ ॥

पूर्ववत्तीरगानूपूज्यदुर्गांपूज्यचयत्नतः ॥

वहिरावरणंत्यक्त्वांगणेशानांचसप्तमम् ॥२९॥

प्रथमकी भांति श्रीदुर्गादेवी की पूजा करके बाहर के आवरण त्यागकर सप्त गणेशको पूजे ॥२९॥

मध्येप्रदक्षिणंकुर्यादसीवरुणयोःकृती ॥

सन्मुखीभूयाविधिवत्पूज्यायेवामतास्थिताः ॥३०॥

अस्सी और वरुणा के मध्यमें प्रदक्षिणा करै और बाम स्थानमें पूजाकरके स्थितहोय ॥३०॥

देवादेव्यश्चफलदाःक्षेत्रपालाःप्रयत्नतः ॥

एकरात्रंद्विरात्रंवावसेन्मध्येत्रिरात्रकम् ॥३१॥

देवता, देवी, क्षेत्रपाल यत्नसे इनके स्थानो में १।२।३ दिन बसै ॥३१॥

यत्रश्रद्धासुमहतीवसेत्तत्रनसंशयः ॥

प्रत्यहंदंडपाणेस्तुपूजाकार्याप्रयत्नतः ॥३२॥

जिसस्थानमें श्रद्धाहोय वहांपर अवश्य वासकरके नित्य दंडपाणिकी पूजा करै ॥३२॥

दंडपाणेःपूजनेनसिद्धाभवतिनान्यथा ॥

दंडपाणेयक्षपतेक्षेत्रसंन्यासिवल्लभ ॥३३॥

पंचक्रोशस्ययात्रेयंसिद्धामेत्वत्प्रसादतः ॥

अनेनश्लोकमंत्रेणप्रार्थनापूजनंस्मृतम् ॥३४॥

श्रीदंडपाणिके पूजन करने से सर्वकाम शीघ्र सिद्ध होते हैं "इस प्रकार नमस्कार करे" हे दंडपाणे! हे यक्षपते!! हे क्षेत्रसंन्यासिवल्लभ!!! आपके प्रसाद से यह पंचक्रोशयात्रा सिद्ध हुई यह श्लोक पढ़कर प्रार्थना करैं ॥३३॥३४॥

प्रत्यहंकुर्वतांयात्रासंपूर्णाभवतिध्रुवम् ॥

आगत्यविश्वनाथस्यपूजाकार्यातुपूर्ववत् ॥३५॥

प्रतिदिन यात्रा करते हुये निश्चय यात्रा संपूर्ण होतीहै और यात्रा से आकर विश्वनाथ का पूजन पहले की भांति करै ३५

देव्युवाच ॥प्रत्यहंदंडपाणेस्तुपूजाप्रोक्ताविशेषतः॥

किमेतद्वददेवेशयात्रामुद्दिश्यशंकर ॥३६॥

श्रीपार्वती बोलीं, हे शंकर! आपने नित्य दंडपाणि की पूजा कही पर नित्ययात्रा म दंडपाणि का पूजन किस लिये है ३६

महादेवउवाच ॥ काशींप्राप्यवहिर्नैव

गच्छेत्सर्वात्मनाक्वचित् ॥ मन्मुखात्स

न्यगाश्रुत्यक्षेत्रसन्यासकृत्तमः ॥३७॥

श्रीमहादेवजी बोले मेरा कही हुई यत्न को श्रवण करके संन्यास करनेवाला मनुष्य काशीमें प्राप्त होकर बाहर न जाय ३७

दंडपाणिःसभवत्तदारभ्यवरानने ॥
पुनःकालांतरेदेविऋषिभिर्नारदादिभिः ॥३८॥
पृष्टोहंक्षेत्रजनितपापनाशनमुत्तमम् ॥
सदासुदुर्लभंदेविप्रायश्चित्तंतदामहत् ॥३९॥
उपदिष्टंमहालिंगंप्रदक्षिणमशेषतः ॥
तच्छ्रुत्वापृष्टवान्दंडपाणिःक्षेत्रपरायणः ॥४०॥

हे वरानने ! प्रथम (बहुतकाल के पहिले) ऋषि नारद आदि करके क्षेत्रजनित पाप नाशके लिये मैं पूँछा गया तब मैंने हे देवि ! सदासुदुर्लभ प्रायश्चित्त और महालिंग की प्रदक्षिणा कहा यह सुनकर दंडपाणि पूँछते भये ३८॥३९॥४०

तदामयोपदिष्टोसौमहापाशुपतव्रती ॥
क्षेत्रयात्राद्वितीयेयंमयोक्तादंडपाणये ॥४१॥

हे पार्वती ! दंडपाणि के लिये भी मैं यही प्रायश्चित्त और क्षेत्रप्रदक्षिणा कहा ॥ ४१ ॥

अतोदंडपतेःपूजाकर्त्तव्यापूर्त्तिकारिणी ॥
पंचक्रोशात्मकस्यैवलिंगस्यपरमात्मनः ॥
प्रदक्षिणामिदंकृत्वाजीवन्मुक्तोभवेन्नरः ॥४२॥

इससे दंडपाणिकी पूजा क्षेत्रयात्रा की पूर्ति करनेवाली

है पंचक्रोशात्मक शिवलिंग की प्रदक्षिणा करके मनुष्य जीवन्मुक्त हो जाता है ॥ ४१ ॥

देव्युवाच ॥ ज्ञात्वापिश्रद्धयादेवनकुर्वंतिप्रदक्षिणम् ॥ तत्केनहेतुनामर्त्याउपेक्षंतेमहाफलम् ॥ महादेवउवाच ॥ श्रद्धापुण्यवतांदेवीनपांडित्यादिभिश्चसा ४४

श्रीपार्वती बोली, क्षेत्रप्रदक्षिणा का माहात्म्य जानकर भी हे देव! प्रदक्षिणा नहीं करते उनको किस यत्न से महाफल मिलेगा, यह सुन महादेव बोले, हे देवि! पंडितों को भी श्रद्धा होना कठिन है ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

तस्माद्धर्मेप्रयततांसिध्येत्सर्वंनचान्यतः ॥ यत्रयत्रपरिरज्यतेजनस्तत्रतत्रसुखमेधतेपुनः ४५

इससे धर्म में यत्न करें तो सर्व काम सिद्ध होय जहां २ धर्मरूपी तेज प्राप्त होताहै वहीं २ सुख बढ़ता जाताहै॥४५॥

साधनानिविदधातितत्परोयेनतत्फलमवाप्नुयान्नरः॥ लौकिकेपरमवैदिकेथवापामरःपरमतत्वविस्तथा ४६

क्या पामर क्या तत्ववित जो पुरुष लौकिक अथवा वैदिक साधनाओंको धारण करताहै उसको उसी प्रकार फल प्राप्तहोताहै ४६

मादकःपरममोदकोयथादीयतेकपटभार्ययायथा ॥ मोहितोनचविचारयत्ययंजीवनंमरणमप्यहोवशी ४७

मादक अतिप्रसन्न होकर जैसे कपट भार्या (वेश्या)को मोहित हो जीवन मरण का न विचार करके जो कुछ देताहै॥४७॥

एवमेकंकालकूटंइन्द्रियंसर्वनाशकृत् ॥
तदेवशोधितंयद्वद्विषमप्यमृतंभवेत् ॥ ४८ ॥

उसी प्रकार कालकूट विष इन्द्रियोंको शोधित व अशोधित अमृत व विष होता है ॥ ४८ ॥

जगत्तृणीकृत्यसकालमृत्युंआत्मानमायोज्य
शिवेनयोगैः ॥ अविघ्नमेवंस्वमलंविसृज्य
शरीरसंज्ञंमलखंडभांडम् ॥ ४९ ॥

संसार को तृणवत् करके शिवयोगसे आत्मा को परमब्रह्म में युक्तकर मलखंड भांड शरीरको त्याग करके मुक्त होय ४९

मुक्तोभवेदेषनचान्यथैवमर्त्यःप्रसादान्मम
चैवमुक्तः ॥ कःकर्त्तुमेवंप्रभवत्यविघ्नकलौ
मनुष्योबहुदोषयुक्तः ॥ ५० ॥

यह गति सब मनुष्यों को नहींहै जिसपर मेरी प्रसन्नता है वही मुक्तहै इस यत्नको करनेवाला कौनहै कलियुगमें तो बहुदोषयुक्त मनुष्य देख पड़ते हैं ॥ ५० ॥

अथोपिमद्भक्तियुतोविमुक्तस्त्वद्भक्तियुक्तः
सकलैश्चभावैः ॥ पूर्वोदितादप्यतिदुःख
कोयंविमोहनार्थैरखिलैश्चशास्त्रैः ॥ ५१ ॥

जो पुरुष मेरी और हे देवि ! तुह्मारी भक्ति में सम्पूर्ण भावसे लगे हैं वही पुरुष मुक्त हैं प्रथम कही यत्नसे विमोहनार्थ सम्पूर्ण शास्त्रों करके दुःख कहां है कहीं नहीं ॥५१॥

वीभत्सितेदुर्विषयोकदाचिद्यावानुरागो भवितानरस्य ॥ सचेद्भविष्येत्परमात्मनीशे कोनामयुक्तोनभवेद्भवाब्धेः ॥ ५२ ॥

जो पुरुष सदैव दुर्विषय वासना से डरते हैं और मेरे में अनुराग है जिनका वह पुरुष अवश्य परमात्मा में लय होताहैं उनके लिये संसाररूपी समुद्र क्या है कुछ नहीं ॥५२॥

अविमुक्तंममक्षेत्रंअविमुक्तेश्वरंशिवम् ॥
अविमुक्तजनंशांतंसेवंतेयेधृतव्रताः ॥५३॥

अविमुक्त नामक मेरा क्षेत्र जिसमें अविमुक्तेश्वर शिव विराजमानहैं जो पुरुष व्रतको धारण कियेहैं वे सेवा करतेहैं५३

विमुक्ताःपरमानन्देपदेस्थितिमुपागताः ॥
अनेकजन्मसुमहत्साधनैर्ज्ञानमुत्तमम् ॥५४॥

परमानन्दको प्राप्त होने की इच्छा करनेवाले अनेक जन्मों की साधना से ॥५४॥

प्राप्नुवंतितदेकेनजन्मनासाधुवासिनः ॥
अष्टांगादिभिरन्यैश्चतपोयज्ञादिभिःसदा ॥५५॥
साधितेपाक्षिकीसिद्धिरविमुक्तेनिरर्मला ॥
अविमुक्तात्परोयोगीज्ञानंदानंजपस्तपः ॥५६॥

उत्तमज्ञान प्राप्त होता है और एकही जन्म में साधुजन अष्टांगयोग तप यज्ञ करिके अविमुक्तेश्वर में पाक्षिकी सिद्धि

करने परभी नहीं सिद्ध होता क्षेत्रसंन्यासियों का क्रम मैंने हे अनघे ! तुमसे कहा ॥६०॥६१॥

प्रदक्षिणायास्तुमहान्महापापहरःपरः ॥६२॥

काशी क्षेत्रकी प्रदक्षिणा महापापों के हरने वालीहै इस पंचक्रोशी काशीमाहात्म्य को जो सुनेंगे व सुनावेंगे उनको श्रीविश्वनाथ स्वयं प्रसन्न होकर मनवांञ्छित फल देंगे ६२

इतिश्रीब्रह्मवैवर्तेमहापुराणेतृतीयविभागे
पंचक्रोशीमहिमावर्णनंनामपंचमोध्यायः॥५॥

इतिश्री उन्नावप्रदेशान्तर्गत बरौंदा ग्राम निवासी
पं०आनन्दमाधव दीक्षितात्मज पं०महाराजदीन
दीक्षित भाषा व्याख्या कृते ब्रह्मवैवर्त्ते
महापुराणे तृतीय विभागे काशी
पंचक्रोशी महिमा वर्णनं नाम
पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

दो० सम्बत दो रस ग्रह शशी, माघ शुक्ल गुरु वार ॥
अष्टम तिथि पूरण कियो, पंचक्रोश विचार ॥ १ ॥

॥ इति पंचक्रोशीमाहात्म्य समाप्तम् ॥

मि० माघ शुक्ल अष्टमी गुरुवार
सम्वत् १९६२ वैक्रमी ।

सज्जनों का कृपाभिलाषी
पं० महाराजदीन दीक्षित
मु० बरौंदा—पो०पहरीकलां
जि० उन्नाव ।

अनघ